

बाल निर्माण की कहानियाँ

११

बाल निर्माण की कहानियाँ

(भाग-११)



लेखिका

डॉ० आशा 'सरसिज'



प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००



पुनरावृत्ति सन् २०१४ मूल्य ११.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राक्कथन

डॉक्टर आशा 'सरसिज' द्वारा बालकों के लिए लिखी गईं बाल निर्माण की कहानियों का यह ग्यारहवाँ भाग प्रकाशित होने जा रहा है। प्रसन्नता की बात है कि सारे विज्ञ समुदाय ने इसके सभी खंडों को खूब चाव से पढ़ा और पसंद किया है। बाल-साहित्य का वस्तुतः हिंदी जगत् में बहुत बड़ा अभाव है। इस शून्य की पूर्ति हेतु जो प्रयास बन पड़ा उससे न केवल हिंदी की सेवा हुई है, अपितु बाल मनोविज्ञान के क्षेत्र में नए प्रयोगों का द्वार भी खुला है। जीव-जंतुओं के आपसी व्यवहार, दैनंदिन जीवनक्रम के माध्यम से नैतिक अनुशासन को गले उतारा जा सकता है। इसे बच्चों के अभिभावकों-शिक्षकों, बड़े-बूढ़ों ने भली-भाँति समझा है।

अब वे ब्रह्मवर्चस् प्रकाशन के अंतर्गत ही किशोर मनोविज्ञान पर चार खंड और लिख रही हैं। भावी चार पुस्तकें किशोरवय की समस्याओं, उनके मनोवैज्ञानिक समाधान पर आख्यान शैली में रचित होंगी। आशा है कि उनका स्वागत इसी उत्साह से किया जाएगा जैसा कि पहले के खंडों में हुआ है।

—ब्रह्मवर्चस्

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनपढ़ माँ का सुघड़ बेटा

साँझ का समय था। सूरज छिपने वाला था। रमेश जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा रहा था। आज उसे कुछ देर हो गई थी। उसने सोच लिया था कि जब सारे नीबू बिक जाएँगे तभी वह घर ज़ाएगा। इसलिए वह बाजार में देर तक रुका रहा था। अब गाता-गुनगुनाता खाली डलिया हाथ में पकड़े हुए घर की ओर लौट रहा था। उसका घर थोड़ी दूर था। जल्दी पहुँचने के लिए उसने पीछे वाला रास्ता जहाँ से रेलवे लाइन जाती थी वह पकड़ा था।

रमेश अपनी माँ का इकलौता बेटा था। वृद्ध माँ की इच्छा थी कि वह खूब पढ़े-लिखे, महान् बने, पर यह संभव न हो सका घर की स्थिति कुछ ऐसी थी कि रमेश की पढ़ाई बीच में ही छुड़ानी पड़ी। रात-दिन माँ-बेटे बगीचे की रखवाली करते। हर चौथे-पाँचवें दिन रमेश बाजार में जाकर फल आदि बेच आता। उसी से वे खाने की व्यवस्था करते, साथ ही बीच-बीच में रमेश को कहीं नौकरी भी करनी पड़ जाती थी। रमेश खूब परिश्रम से मन लगाकर काम किया करता। उसकी माँ ने सिखाया था कि परिश्रम से सुख मिला करता है।

रमेश की माँ अनपढ़ अवश्य थीं, पर वह थीं बड़ी विचारशील और सुसंस्कारी। वे अपनी असमर्थतावश रमेश को स्कूल में न पढ़ा पाई थीं, पर उन्होंने उसे अच्छे संस्कार दिए। माता-पिता बच्चों को स्कूल भेजकर अपने कर्तव्य को पूरा हुआ समझ लेते हैं, पर मात्र स्कूलों की पढ़ाई से श्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण नहीं हुआ करता। उसके लिए तो अभिभावकों को स्वयं ही प्रयास करना पड़ता है। माँ की शिक्षा के कारण रमेश छोटी आयु में ही बड़ा साहसी, वीर और सूझ-बूझ वाला बन गया था। माँ ने उसमें दूसरों की सेवा-सहायता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने की भावना का विकास अधिक किया था, क्योंकि समाज का निर्माण और देश का विकास इन्हीं गुणों से संभव हुआ करता है।

रमेश रास्ते में सोचता जा रहा था कि आज माँ उससे खूब खुश होंगी। वह घर जाकर खाना खा-पीकर उनसे कहानियाँ सुनेगा। तभी सहसा उसका ध्यान रेल की पटरी की ओर गया। सामने से धड़धड़ाती हुई रेलगाड़ी चली आ रही थी, पर एक बुढ़िया इससे बेखबर लाइन के बीचोंबीच शान से चली जा रही थी। रमेश ने जोर-जोर से आवाजें लगायीं—"बु बुढ़िया माई ! जल्दी हटो गाड़ी आ रही है।"

पर कानों से बहरी उस बुढ़िया को न कुछ सुनना था, न उसने सुना। उसे दिखाई भी कम देता था। इसलिए वह इस बात से बेखबर पटरी पर अपनी ही धुन में बढ़ी चली जा रही थी, भले ही यमराज के दूत ही उसे क्यों न पकड़ने आ जाएँ ?

गाड़ी निकट आती जा रही थी। रमेश ने देखा कि बुढ़िया सुनने वाली नहीं, तो वह तेजी से भागा और उसे जोर से धक्का दे दिया। वह पटरी से कुछ ही दूरी पर जा पड़ी, पर तब तक गाड़ी वहाँ आ गई थी। इंजन से छिटका कोयला गिरा और रमेश की बाँह पर जा लगा। वह टेरीकाट की बुशशर्ट पहिने था। हवा में चिनगारी भड़क उठी और उसने आग पकड़ ली। उसे उतारकर फेंकने और बुझाने के चक्कर में रमेश का सीधा पैर बुरी तरह आग से जल गया।

तब तक बुढ़िया माई भी सीधी होकर बैठ चुकी थी। पल भर में ही उसकी आँखों के सामने से रेलगाड़ी निकल गई। उसकी समझ में भी अब यह बात आ गई कि उन्हें धक्का क्यों दिया गया था ? वह अपने प्राण बचाने वाले उस बालक के पास तेजी से पहुँची। बुढ़िया ने उस बालक की आग बुझाने में पूरी-पूरी सहायता की। यही नहीं, उसने आवाज लगाकर रास्ता चलते एक-दो राहगीरों को भी बुला लिया। वे उसे अस्पताल ले गए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

डॉक्टर ने रमेश की मरहम पट्टी की, उसे ग्लूकोज चढ़ाया। डॉक्टरों ने पूछा—"बेटे ! तुम इतना कैसे जल गए ?"

रमेश ने डॉक्टर को पूरी घटना विस्तार से बताई। उसे सुनकर डॉक्टर गद्‌गद् हो उठा। छोटे बालक के साहस और परोपकार की भावना के सामने उसका मस्तक श्रद्धा से झुक गया। बूढ़ी माई की आँखों में आँसू भर आए। वह रमेश के सिर पर हाथ फिराते हुए बोली—"बेटा ! मुझ बुढ़िया को मर जाने देता। क्यों तूने मेरे लिए अपनी जान खतरे में डाली ?"

रमेश बोला—"तुम मेरी दादी माँ के समान हो। तुम्हें इस तरह बचाना मेरा कर्त्तव्य था। उसका पालन तो मुझे करना ही चाहिए था।"

"ईश्वर सदैव तुम्हें ऐसी ही शक्ति दे, सद्‌बुद्धि दे और सुखी बनाए।" डॉक्टर ने रमेश की पीठ थपथपाते हुए कहा।

डॉक्टर ने एक चपरासी को रमेश के घर भेजा। उसकी माँ दौड़ी चली आई। रमेश को उसने हृदय से लगा लिया। उसकी आँखों से अविरल अश्रुधारा बह रही थी। डॉक्टर कहने लगा—"बहिन ! धन्य है तुम्हारा मातृत्व। तुमने बालक को जो सुंदर शिक्षा और संस्कार दिए हैं, वे समाज के लिए गर्व का विषय है। अपने लिए तो सभी करते हैं, पर जो संकट आने पर भी दूसरों की सहायता की बात सोचते हैं, उनके लिए कुछ करते हैं—उनका यह जीवन धन्य है।"

डॉक्टर ने रमेश की माँ से कहा कि वह अस्पताल के इस इलाज के खर्च की चिंता न करे। उसकी सारी चिकित्सा निःशुल्क की जाएगी।

रमेश अपनी माँ के साथ कुछ दिन अस्पताल में रहा। अपने सरल, हँसमुख, निश्चल स्वभाव से उसने वहाँ सभी का मन जीत लिया। ठीक होने पर उसे आसपास के मरीजों ने, नर्सों और सभी डॉक्टरों ने खूब सारे उपहार देकर विदा किया। यही नहीं, डॉक्टर ने रमेश की माँ से यह भी कह दिया कि वे उसकी पढ़ाई फिर से शुरू

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कराएँ। उसका सारा खर्च वह देगा। फिर से स्कूल जाने की बात जानकर रमेश खुशी से फूला न समाया।

डॉक्टर ने रमेश का उत्साह ऐसे कामों में और बढ़ाने के लिए उनके साहस और परोपकार की यह सूचना, सूचना मंत्रालय तक भी पहुँचाई। प्रधानमंत्री ने गणतंत्र दिवस समारोह में रमेश को उसकी वीरता के लिए पुरस्कृत किया।



Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माँ की बुद्धिमानी

"चुपचाप तू रुपए मुझे दे दे, नहीं तो फिर मुझ से बुरा कोई न होगा।" विक्रांत कह रहा था।

"बाबूजी ! मेंने तो रुपए देखे तक नहीं।" यह छोटू की आवाज थी।

"अरे ! तू ऐसे नहीं मानेगा।" कहकर विक्रांत ने छोटू के गाल पर तड़ाक से तमाचा मार दिया।

छोटू पीड़ा और अपमान से रोने लगा। शोर सुनकर विक्रांत की माँ कमरे से बाहर निकलीं। वहाँ छोटू दीवार के सहारे खड़ा सुबक-सुबक कर रो रहा था। पूछने पर उसने बताया कि विक्रांत भैया कहते हैं कि पेंट की जेब में २० रुपए का नोट रखा रह गया था। छोटू ने दोनों जेबें टटोल डाली थीं, पर वहाँ मुड़ा-तुड़ा कागज भी न था। अब विक्रांत छोटू को चुपचाप नोट रख देने की धमकी दे रहा था।

माँ ने विक्रांत को डाँटा—"तुम्हें किसी को मारने का क्या अधिकार है ? तुम्हें ही अपनी पेंट की ज़ेब देखकर धुलने के लिए डालनी थी।"

फिर वह छोटू से बोली—"छोटू तुम्हारे ऊपर हमको पूरा विश्वास है। तुम वर्षों से हमारे कपड़े धो रहे हो।"

जैसे-तैसे समझा-बुझाकर उन्होंने छोटू को घर भेजा। फिर उन्होंने विक्रांत को डाटा—"तुम्हें इस तरह उस छोटे बच्चे को मारने का कोई अधिकार न था। गलती तुम्हारी थी, दूसरे को तुमने क्यों दंड दिया ?"

"माँ ! नोट तो पेंट की जेब में ही रखा गया था।" विक्रांत ने फिर सफाई दी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"तुम भूल करते हो विक्रांत। तुमने कहीं और रखा होगा। मैं कपड़ों की जेब देखकर ही धुलाई के लिए डालती हूँ। तुम्हारी पेंट भी मैंने देख ली थी, उसमें कुछ न था।" माँ बोली।

अब विक्रांत निरुत्तर हो गया। आगे वह कहता भी क्या ? उसकी योजना विफल हो गई थी। उसने तो सोचा था कि छोटू को मार-पीटकर, उस पर चोरी का अपराध लगाकर वह अंत में उससे रुपए झटकने में सफल हो जाएगा, पर हुआ इसका उल्टा। माँ ने स्पष्ट घोषणा कर दी—"तुमने अपनी लापरवाही से घर खर्च के रुपयों को खोया है। अब ये रुपए तुम्हारे जेब खर्च के रुपयों में से कटेंगे।"

विक्रांत ने बहुत अनुनय-विनय की, पर माँ ने एक न मानी। वह अपने निर्णय पर दृढ़ थीं। यही नहीं पिताजी और दीदी ने भी माँ की बात का समर्थन किया। उनका कहना था कि विक्रांत बहुत लापरवाह होता जा रहा है। प्रायः रुपए खो देता है, इसलिए उसे दंड मिलना ही चाहिए।

अब माँ ने विक्रांत से बाजार का सामान मँगाना भी बंद कर दिया था। वह चीजें महँगी लाता था और प्रायः रुपए भी बचा लेता था। माँ या पिताजी चाहे कितने ही थके हों, वे स्वयं बाजार जाते। यही नहीं, माँ अब अपने पर्स की भी निगरानी रखने लगी थीं। वे उसे विक्रांत की पहुँच से दूर रखतीं। उन्हें एक-दो बार रुपए खो जाने से विक्रांत पर संदेह हो गया था।

एक सप्ताह तक विक्रांत घर से कुछ भी न पा सका। उसका जेब खर्च भी बंद कर दिया गया था। विक्रांत के साथी उसका उपहास करते और कहते—"वाह भाई भोलेनाथ ! मूर्खराज अपने दोस्तों से कुछ तो सीखो।"

सभी खाते-पीते घरों के लड़के थे। वे अपने घरों से प्रतिदिन कुछ रुपए छिपाकर ले ही आते थे। सभी के रुपए इकट्ठे किए जाते और वे मिलकर खाते-पीते रुपए बिगाड़ते। विक्रांत अभी कुछ दिन पहले ही उनकी मंडली में आया था। चार-छह दिन तो वह जैसे-तैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रुपए लाने में सफल हो गया था, पर अब इस घटना के बाद से तो वह कुछ भी न ला पाया था। साथी पहले तो उसका मजाक बनाते रहे, फिर उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि यदि तुम दो-चार दिन में घर से कुछ न लाए, तो हमारी मंडली से अलग कर दिए जाओगे। तुम्हारे जैसे मूर्खों की हमें जरूरत नहीं।"

विक्रांत को उनकी बात बहुत बुरी लगीं। घर आकर वह मौके की तलाश में जुट गया। रात को वह कुछ सोचते-सोचते जल्दी ही सो गया था। सोते-सोते अचानक ही उसकी आँख खुल गई। माँ और पिताजी की बातें उसे स्पष्ट सुनाई दे रही थीं। पिताजी कह रहे थे—"तुम बहुत दिनों से कार्डीगन खरीदने के लिए कह रही थीं। चलो कल बाजार से खरीद लेते हैं।"

माँ कह रही थीं—"पर मैं अब सोचती हूँ कि विक्रांत का कोट सिलवा दूँ। बहुत दिनों से पीछे पड़ रहा है। मुझे तो कोई खास जरूरत भी नहीं, अगले वर्ष खरीद लूँगी।"

पिताजी हँसते हुए कह रहे थे—"तुम तो हमेशा ऐसा ही किया करती हो।"

उनकी बात सही भी थी। विक्रांत को माँ बहुत प्यार करती थीं। वे उसकी इच्छा पूरी करने की कोशिश करतीं। अपनी चीजों में कटौती करके, वे उसके लिए चीज मँगाती। उनका परिवार मध्यम वर्ग का था, इसलिए माँ सदैव बजट के अनुसार ही रुपए खर्च किया करती थीं।

माँ से छल करने के लिए विक्रांत का मन उसको धिक्कारने लगा। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। रात में वह ठीक से भी न सो सका।

सुबह माँ ने उसे स्कूल जाने के लिए उठाया, तो उसके सिर में तेज दर्द था। "माँ ! आज तबियत ठीक नहीं, मै स्कूल नहीं जा पाऊँगा।" वह बोला।

उसकी बात सुनकर और लाल आँखें देखकर माँ चिंता से भर उठी। उन्होंने उसका माथा छूकर देखा, सिर पर हाथ फिराया और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फिर रजाई उठाकर सोने के लिए कहकर चली गईं। काम छोड़कर बीच-बीच में माँ कई बार उसे देखने आईं। घर का काम समाप्त होने पर तो वे उसी के पास बैठी रहीं। वे विक्रांत का सिर दबाती रहीं और तेल मालिश भी करती रहीं। अपने प्रति माँ की इतनी अधिक चिंता से विक्रांत रो उठा। वह बहुत ही बड़ी ग्लानि अनुभव कर रहा था।

विक्रांत की आँखों में आँसू देखकर माँ ने समझा कि संभवतः उसकी तबियत अधिक खराब हो गई। उन्होंने उसका सिर गोद में रख लिया और प्यार से बोली—"मेरे बच्चे ! बोलता क्यों नहीं तुझे क्या परेशानी है ?

अब तो विक्रात माँ से लिपटकर फफक-फफक कर रो उठा। कहने लगा—"माँ ! मैं तुम्हारा गंदा बच्चा हूँ। मुझे खूब मारो, घर से निकाल दो।"

"न-न ! हमारा विक्की तो बड़ा राजा विट्टू है।" माँ स्नेह भरे स्वर में बोलीं। उन्होंने विक्रांत को कसकर अपने सीने से लगा लिया। उन्होंने अपने आँचल से उसके आँसू पोंछे, फिर उसकी ठोड़ी को ऊपर उठाती हुई बोलीं—"राजा बेटे ! सच-सच बताओ क्या बात है ?"

विक्रांत अब माँ से सच्चाई न छिपा सका। उसने चोरी करने वाले बच्चों के समूह में जाने से लेकर अब तक की पूरी घटना माँ को विस्तार से सुना दी।

माँ ने उसके सिर पर हाथ फिराया, माथे को चूमा और उसकी आँखों में झाँकते हुए बोलीं—"विक्रांत ! तुम अच्छा-बुरा कोई भी काम करते समय अपनी माँ को सदैव याद रखना। यह न भूलना कि बुरे कामों का पता कभी न कभी तो लगता ही है। तुम्हारे बुरे काम उसे जीते जी मार देंगे। तुम अच्छे काम करोगे तो अपना सिर ऊँचा करके हँसते-हँसते जी सकोगे और सारी कठिनाइयों को भी सह सकोगे।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"माँ ! जो गलती हुई है उसके लिए मुझे खूब दंड दो। अब मैं आगे से कभी गलती नहीं करूँगा।" विक्रांत आँखें नीची करके बोला।

माँ ने उसके दोनों गालों पर हल्की-सी चपत लगाई और बोलीं—"कल से तुम प्रतिदिन होने वाली अच्छी या बुरी हर बात माँ को सच-सच बताया करोगे। यही तुम्हारा दंड है।"

विक्रांत माँ की बुद्धिमानी को समझ न सका। वह उनके सीधेपन पर इतना हल्का दंड देने पर मन ही मन हँस दिया और माँ से लिपट गया।



Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिक्षा की सार्थकता

आगरा में ताजमहल के पीछे यमुना नदी बहती है। इसमें अनेक जल के जीव हैं। मगरमच्छ, कछुआ, मेंढक, मछली आदि अनेक प्रकार के प्राणी यहाँ घर बनाकर रहते हैं।

आसपास के मनुष्य प्रायः यमुना के तट पर आ जाते। ये भी मनुष्य भिन्न-भिन्न प्रकार के होते। कुछ यों ही घूमने के लिए आते। कुछ महिलाएँ आतीं तो मछलियों के लिए आटे की गोलियाँ डालतीं। कुछ ग्वाले आते जो अपनी गाय-भैंस चरने को छोड़ देते और किनारे के वृक्षों की छाया में गपशप करते। कुछ मछुआरे भी आ जाते। ये नदी में जाल डालते, जाल से सबसे अधिक डर था बेचारी मछलियों की नन्हीं जान को। खाने-पीने के लोभ में वे प्रायः जाल में फँस जाया करतीं। मछुआरे जब जाल समेटते, तो मछलियाँ पाकर बड़े प्रसन्न होते मछलियों को निकालकर वे बड़ी-बड़ी डलियों में रखते। वे बिना पानी के तड़फती रहतीं। कुछ मछलियाँ मरतीं और कुछ जीतीं। मछुआरे उन्हें ले जाकर घरों में, बाजारों में बेच दिया करते।

मछुआरे प्रायः ही जाल डाला करते। ढेरों मछलियाँ एक दिन में मृत्यु के मुँह में समा जातीं। मछलियों की रानी अदिति यह सब देखकर बड़ी परेशान होती। विपत्ति में केवल परेशान होने से कुछ लाभ नहीं होता। सोच-विचार कर कार्य करने से ही किसी मुसीबत को कम किया जा सकता है। अदिति इस बात को अच्छी प्रकार से समझती थी। उसने पूरी स्थिति पर गंभीरता से विचार किया और अंत में हल खोज ही लिया।

दूसरे ही दिन से अदिति ने सारी मछलियों का प्रशिक्षण प्रारंभ कर दिया। उन्हें आत्मरक्षा के उपाय समझाए जाते। सभी मछलियों को सख्त मना कर दिया गया कि वे खाने-पीने के लोभ में न आएँ। होता यह था कि खाने की चीज डालकर वे जाल में फँसा ली जाती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थीं। मनुष्यों की इस दुष्टता का पता उन्हें तभी लगता जब वे जाल में फँस जातीं, पर तब हो भी क्या सकता था ? जाल से किसी प्रकार निकल भागने में तो बहुत कम मछलियाँ ही सफल हुआ करतीं। अधिकांश तो अपने प्राणों से हाथ भी धो बैठतीं।

मछलियों को प्रतिदिन प्रशिक्षण देने का यह फल निकला कि वे अब जाल में कम फँसती। पानी की सतह पर खाने की अनेकों चीजें डाली जाती, पर वे उनकी गंध पाकर भी चुपचाप नीचे ही नीचे घूमती रहतीं। उन्होंने अपने मन पर संयम कर लिया था। अपने खाने की जरूरत वे जल में पाई जाने वाली चीजों से पूरी कर लिया करतीं।

जो मछलियाँ अपने मन पर नियंत्रण न रख पातीं, लालच में ऊपर चली जातीं, वह जाल में फँसकर मारी जातीं, पर ऐसी मछलियाँ कम ही होतीं। इस शिक्षण का फल यह हुआ कि मछुआरों के जाले अब खाली से सिमटने लगे। वे जाल बिछाते, पर उनके हाथ एक-दो मछलियाँ ही आतीं। तब वे बड़े खीजते। "अब यहाँ मछलियाँ इस समय खतम हो गई हैं।" यह सोचकर आखिर उन्होंने वहाँ जाल बिछाना ही छोड़ दिया।

आठ-दस दिन तक भी जब मछुए न आए, तो मछलियाँ फूली न समाईं। उन्होंने एक बहुत बड़े प्रीतिभोज का आयोजन किया। सभी खूब नाचीं, उछलीं और कूदीं। दुष्ट मनुष्यों के चँगुल से छूट जाने पर वे बड़ी प्रसन्न थीं।

भविष्य में आने वाली विपत्ति के समय मे सोचना और पहले से ही उसे दूर करने के उपाय सोच लेना बुद्धिमानी का लक्षण है। इससे आने वाले संकट से बहुत आसानी से निबट लिया जाता है। अदिति भी कम बुद्धिमती न थी। वह सोचने लगी—"ये मनुष्य आज नहीं तो फिर कुछ दिन बाद यहाँ आएँगे। ये बड़े लोभी और धूर्त हैं। सीधी-साधी मछलियाँ तब तक सारी बात भूल जाएँगी और फिर जाल में फँस जाएँगी। इसलिए इन्हें प्रतिदिन शिक्षा देना अनिवार्य है, जिससे इन्हें याद रहे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अतएव सारी मछलियों को प्रतिदिन शिक्षा दी जाती। मछलियाँ तो अब काफी समझदार हो चली थीं। अदिति के सामने मुख्य समस्या थी बच्चों की। नन्हें बच्चे अब बड़े होने लगे थे। नासमझ भी थे और चंचल भी। उन्हीं के लिए डर था कि कहीं वे ज़ाल में न फँस जाएँ। अतएव उन्हें प्रतिदिन सिखाया-पढ़ाया जाता। सभी बच्चों ने यह बात अच्छी तरह से रट ली—

"सावधान जल की परियों,
सोन मछलियों सावधान।
आज हमारे घर में डाकू,
मछुआरों ने जाल बिछाया।।
चारा डाला बंशी फेंकी,
बैठ किनारे घात लगाया।
सब नीचे तल में छिप जाओ,
कहीं जाल में न फँस जाओ।

बच्चे यहाँ-वहाँ इसे गाते फिरते। अदिति सोचने लगी—ये केवल इसे गाते भर हैं या इसका अर्थ भी समझते हैं ? क्या इसके अनुसार आचरण भी कर सकते हैं ? जो बात यों ही रट भर जाए, व्यवहार में न लाई जाए वह बेकार है, वाणी का परिश्रम भर है। जीवन में किसी बात को सोचने, रटने भर से सफलता नहीं मिलती। पूरी सफलता मिला करती है विचार या शिक्षा को व्यवहार में लाने से। अतएव उसने सोचा कि इनकी परीक्षा ली जाए, पर कैसे ? यह एक विचार का विषय था।

कुछ दिनों बाद भूला-भटका एक मछुआरा आ ही गया। उसने जाल बिछाया। अदिति ने सभी मछलियों को चुपचाप यह कह दिया कि वे बच्चों से कुछ न कहें, अपनी ही बुद्धि से काम करने दिया जाए।

मछुआरे ने पानी की सतह पर खाने की चीजें डालीं। उनकी खुशबू पाते ही बच्चे मचल उठे। जैसी कि उनकी आदत थी, वे गा रहे थे—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"सावधान जल की परियों,
सोन मछलियों सावधान।
आज हमारे घर में डाकू,
मछुआरों ने जाल बिछाया।।
चारा डाला, बंसी फेंकी,
बैठ किनारे घात लगाया।
सब नीचे तल में छिप जाओ,
कहीं जाल में न फँस जाओ।"

और यह गाते-गाते वे ऊपर आए, खाने की ओर बढ़े तथा जाल में फँस गए।

अदिति अब तक तो चुपचाप देख रही थी, पर बच्चों के जाल में फंसते ही वह तेजी से अपनी सहेली तारा कछवी के पास भागी चली गई। उसने गुपचुप उसके कान में कुछ कहा और पानी में छिपकर मछुवारे को देखने लगी।

जैसे ही मछुआरे ने नदी में से जाल निकाला तारा ने चुपचाप जाकर उसके पैर में जोर से काट खाया। अब मछुआरे का अँगूठा तारा के मुँह में आ चुका था। वह दर्द से चीख उठा। उसके हाथ से जाल छूटकर नदी में गिर पड़ा। सारे बच्चे झट से निकलकर अपने घरों की ओर भागे चले गए।

अदिति ने उन सबको इकट्ठा किया और कहा—"बच्चो ! तुम सभी परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गए हो। वह शिक्षा जो केवल रटी भर जाए, तो बिलकुल बेकार है। शिक्षा की सार्थकता, उसका लाभ तभी है जब उसे आचरण में ढाला जाए। उस शिक्षा से क्या लाभ जिससे हमारे जीवन में, व्यवहार में कोई परिवर्तन न आए। उस शिक्षा की क्या उपयोगिता जो हमें जीवन की स्थितियों में सूझबूझ न दे पाए ?"

"आप ठीक कहती हैं महारानीजी।" सारे बच्चे एक साथ बोले। फिर वे कहने लगे—"अब तक तो हमने रटा भर था, पर अब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आपकी शिक्षा को व्यवहार में उतारेंगे। आप फिर परीक्षा लीजिएगा, हम उसमें उत्तीण होंगे।''

"अवश्य-अवश्य।'' अदिति मुस्कराते हुए बोली।

बच्चे चल पड़े अगली परीक्षा की तैयारी करने, संयम और आत्मबल का दूसरा पाठ सीखने, जिसके बिना पहला पाठ अधूरा रह गया था।



Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हाथी की चतुराई

हिमालय की तराई में बाँस का एक विशाल वन था। वहाँ हाथियों का एक विशाल झुंड रहता था। सभी हाथी मिल-जुलकर स्नेह से रहते। हाथियों के उस झुंड में अनेक बच्चे भी थे। हाथी उन्हें भी प्रेम और सहानुभूति का पाठ पढ़ाते।

एक बार सारे बच्चे जिद करने लगे कि वे नदी में नहाने के लिए जाएँगे। झुंड की एक वृद्धा हथिनी को उनके साथ कर दिया। बच्चे चाह रहे थे कि अकेले ही जाएँ, क्योंकि बूढ़ी दादी माँ के रहते वे मनमाने ढंग से नहीं नहा पाते, शरारत नहीं कर पाते। बच्चों के नेता गणेश ने कहा भी—"अब तो हम बड़े हो गए हैं और समझदार भी। हम सभी मिल-जुलकर चले जाते हैं, दादी माँ तुम चलकर क्या करोगी ?"

दादी माँ गणेश और दूसरे बच्चों के मन की बात समझ गई। वह हँसते हुए बोली—"मैं सब समझती हूँ रे, तू क्यों मना कर रहा है ? तुम्हारा जैसा मन हो नहाना-खेलना, मैं तुमसे क्या कहूँगी ?"

हाथी के बच्चों ने देखा कि दादी माँ मानने वाली नहीं तो वे चुप हो गए। पूरा काफिला घूमता-गाता, सूँड़ से रास्ते में फल तोड़कर खाता नदी के किनारे पहुँचा। सारे बच्चे नदी में कूद पड़े। कोई नदी में पैर पसारकर बैठ गया, कोई अपनी सूँड़ से दूसरे पर पानी की फुहारें बरसाने लगा, तो कोई सूँड़ से दूसरे को गुदगुदी करने लगा। दादी माँ किनारे पर बैठी हुई बच्चों को देख-देखकर प्रसन्न हो रही थीं।

तभी गणेश दादी माँ के पास आया और बोला—"ओह ! बूढ़ी माँ तुम यहीं बैठी रहोगी क्या ? आओ थोड़ी देर हमारे साथ नहा लो।" गणेश दादी माँ को सूँड़ से पकड़कर नदी में ले गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उधर एक मगर बहुत देर से पानी में घात लगाए बैठा था। दादी माँ जैसे ही मुड़ी उसने एक हाथी के बच्चे का पीछे से कसकर पैर पकड़ लिया। पर दादी माँ की वृद्ध और अनुभवी आँखों से यह छिपा न रहा। उन्होंने तुरंत धीरे से गणेश से कहा—"गणेश जल्दी करो। मगर धनेश को लिए जा रहा है।"

तब तक हाथी के दूसरे बच्चों का ध्यान भी उधर चला गया था। वे शोर मचाने वाले थे, पर दादी माँ ने सबको इशारे से मना कर दिया। वे सभी उधर ही बढ़ चले, जहाँ मगर के चँगुल में धनेश फँसा हुआ था।

वहाँ धनेश मगर से कह रहा था—"वाह भाई वाह ! आज तो तुम्हें खूब मोटा लकडी़ का खंभा मिल गया।"

मगरमच्छ कुछ न बोला। तब धनेश ने फिर कहा—"भाई साहब ! क्या इससे घर बनाओगे ?"

मगरमच्छ चुपचाप आगे बढ़ता रहा। धनेश ने धीरे से गणेश और बूढ़ी माँ से कुछ कहा। उन्होंने तुरंत दूसरे बच्चों को इशारा किया। वे सभी बच्चे थोड़ी-थोड़ी दूर पर नदी के उस पार तक फैल गए।

मगरमच्छ थोड़ा आगे बढ़ा होगा कि हाथी का एक बच्चा बोला—"वाह भाई ! कितना मोटा लकड़ी का खंभा है। क्या तुम इसकी नाव बनाओगे ?"

मगरमच्छ ने ध्यान से अपने मुँह में लगी चीज को देखा। "नहीं, यह तो हाथी का पैर है।" उसने अपने आप से कहा और आगे बढ़ने लगा।

मगरमच्छ थोड़ा आगे ही बढ़ा था कि पानी में नहाता एक हाथी का बच्चा बोला—"प्रणाम दादाजी ! सुबह-सुबह मुँह में लकड़ी का मोटा तना दबाए कहाँ जा रहे हो ? क्या दादी ने खीर पकाने के लिए लकड़ी मँगाई है ?"

हाथी की बात सुनकर उसके साथ के सभी हाथी जोर से हँस पडे। मगरमच्छ खिसिया गया। वह मन ही मन सोचने लगा कि मैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बेकार में कहीं खंभा ही तो नहीं ढो रहा हूँ। उसने अपना मुँह खोलकर हाथी का पैर बाहर कर दिया और वहाँ से तेज गति से भाग लिया।

मगरमच्छ के आँखों से ओझल होते ही सारे हाथी खुशी से जोर से चिंघाड़ उठे। सभी ने बूढ़ी माँ को घेर लिया और बोले—"वाह बूढ़ी माँ ! आपने अच्छी युक्ति सोची।"

बूढ़ी माँ कहने लगी—"यह सफल युक्ति धनेश की है, उसी को बधाई दो।"

फिर क्या था ? सारे हाथियों ने धनेश को घेर लिया। उसको सूँड़ों पर उठा लिया और लगे उसकी जय बोलने। गणेश ने बहुत से फूल तोड़े, उन्हें एक-दूसरे में फँसाकर माला बनाई और धनेश को पहिना दी। धनेश को आगे करके, झूमता-झामता, शोर मचाता हाथियों का झुंड वापिस घर लौटा।

रास्ते में गणेश धनेश से कहने लगा—"धनु तुम तो बड़े ही चालाक हो गए हो।"

बूढ़ी माँ कहने लगीं—"गणेश ! यह चालाकी नहीं बुद्धिमानी है। चालाकी वहाँ होती है, जहाँ अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए दूसरे को कोई नुकसान पहुँचाया जाता है। इसके विपरीत अपना संकट दूर करने के लिए ऐसा उपाय सोचना कि जिसमें दूसरे का अहित न हो—बुद्धिमानी है।"

हाथी का एक बच्चा पूछने लगा—"अच्छा बूढ़ी माँ ! उस मगरमच्छ ने पहले तो हमारी बात पर विश्वास नहीं किया, बाद में क्यों कर लिया ?"

बूढ़ी माँ समझाने लगीं—"बच्चो ! एक ही बात को जब बार-बार दुहराया जाता है, तो वह सही लगने लगती है। बुद्धिमान वह है, जो दूसरों की कही-सुनी बात पर तब तक विश्वास नहीं करता जब तक कि स्वयं उसे परखकर न देख ले। सामान्य बुद्धि वाले तो दूसरों के कहे-सुने में आ जाते हैं और बिना सोचे-समझे ही काम करने लगते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बूढ़ी माँ फिर कहने लगीं—"हमने तो यह उपाय आत्म-रक्षा के लिए अपनाया था, परंतु ठग इस प्रकार ही ठग लेते हैं। बुद्धिमानी इसी में है कि अपरिचित के कहने पर विश्वास करे, अपने विवेक से काम ले।"

"आज आपने बहुत अच्छी बात बताई बूढ़ी माँ।" हाथी के बच्चे एक साथ बोले।

बूढ़ी माँ ने घर जाकर सभी बच्चों की बहुत प्रशंसा की। वे कहने लगीं कि बच्चे अब वास्तव में बड़े और समझदार हो गए हैं। अब उन्हें धनेश और गणेश के नेतृत्व में अकेले बाहर जाने की अनुमति मिल गई। झुंड के नेता ने सभी को बधाई दी। बूढ़े हाथी-हथनियों ने उन्हें शुभ कामनाएँ दीं कि भविष्य में विपत्ति में फँसने पर वे अकेले ही उनसे निपट सकने में समर्थ हों।



Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विमल का संकल्प

विमल की माँ आज बड़ी परेशान थीं। बात भी कुछ ऐसी थी। विमल उनका एक मात्र बच्चा था। वह चाहती थीं कि वह खूब पढ़े-लिखे अच्छा बने। जब वह छोटा-सा था तभी उसके पिता मर गए थे। विमल की माँ कई घरों में चौका-बर्तन करतीं। सारे दिन बहुत मेहनत करने के बाद उन्हें इतना पैसा मिल पाता कि रूखा-सूखा खा सकें, पर वह विमल को किसी कमी का अनुभव न होने देतीं। अच्छा खिलातीं, पहनातीं और पढ़ातीं। अपने खर्चों में कमी करके वह विमल की जरूरतें पूरा करतीं।

आज स्कूल की छुट्टी के बाद भी कुछ समय बीत गया और विमल न लौटा, तो वह परेशान हो उठीं। "न जाने कहाँ रह गया, कुछ दुर्घटना तो नहीं हो गई ?" यही सोचती हुई वे दरवाजे पर जाकर खड़ी हो गईं। तभी उनकी नजर पड़ौस के किशन पर पड़ी। वह सामने के मैदान में खेल रहा था। वह विमल के स्कूल में उसी की कक्षा में पढ़ता था।

विमल की माँ ने किशन को आवाज देकर बुलाया और विमल के विषय में पूछा। किशन मुस्करा दिया। विमल की माँ को कुछ शक हुआ। जब उन्होंने बहुत पूछा तो किशन ने बताया कि विमल बुरे लड़कों की संगति में पड़ गया है। वह चोरी करने लगा है। स्कूल की छुट्टी के बाद वह और उसके साथी प्रायः ही बाजार जाते हैं। वहाँ वे खूब खाते-पीते हैं, पैसा बिगाड़ते, सिनेमा देखते हैं। आप विमल को मत बताइए कि मैंने आपसे यह सब कहा है।" कहकर किशन फिर खेल के मैदान में दौड़ गया।

विमल की माँ को यह सुनते ही काठ मार गया। वह कमरे में जाकर जमीन पर लेट गईं। न जाने कितने देर तक वह दुःखी होती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहीं। विमल आया तब कहीं जाकर वह उठीं। "माँ ! तुम अंधेरे में जमीन पर क्यों लेटी हो ?" विमल ने पूछा।

माँ ने उसकी बात का कोई उत्तर न दिया। वे पूछने लगीं—"कहाँ थे तुम इतनी देर से ?"

"मैं ललित के घर पर चला गया था।" विमल कहने लगा।

माँ ने उसे संदेह की दृष्टि से देखते हुए कहा—"चलो खाना खा लो।"

"ओह माँ ! आज तुम अकेले खा लो। मैं वहीं खा आया हूँ। कहकर विमल बाहर चला गया।

माँ ने विमल का बस्ता देखा। एक-एक करके जब किताबें खोलीं, तो एक किताब के बीच से पाँच रुपए का नोट निकला। अब विमल पर उनका शक और भी बढ़ गया। उनके मन को बड़ा गहरा धक्का लगा।

रात को सोते समय उन्होंने विमल का सिर सहलाते हुए पूछा—"बेटे ! तुम चोरी करने लगे हो क्या ?"

"किसने तुम्हें भड़का दिया है माँ ?" विमल चौंककर बिस्तर से उठ बैठा।

"किसी ने नहीं भड़काया। तुम्हारे बस्ते में आज पाँच रुपए का एक नोट देखा था।" माँ बोली।

"वह तो ललित ने किताब खरीदने के लिए दिया था।" विमल कहने लगा।

"माँ से झूठ न बोलना बिंलू, नहीं तो तुम्हारी माँ जीते जी मर जाएगी।" माँ ने रुँधे हुए कंठ से कहा।

"ओह ! तुम तो बेकार में शक करती हो माँ।" कहकर विमल ने करवट बदल ली और जल्दी ही सो गया।

विमल ने बात टाल दी थी, पर उससे माँ का संदेह न मिटा। उन्होंने मन ही मन कहा—"मैं आखिर सच्चाई का पता लगाकर ही रहूँगी।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूसरे ही दिन से उन्होंने खोज-बीन प्रारंभ कर दी। विमल की कक्षा में पढ़ने वाले कई लड़के पास-पड़ौस में रहते। उन्होंने उनसे तरह-तरह से घुमा-फिराकर वह बात पूछी। सभी ने यही बताया कि विमल चोरी करने लगा है। स्कूल में उसे एक-दो बार छोटी-मोटी सजा भी मिल चुकी है।

यह सब जान-सुनकर विमल की माँ को गहरा धक्का पहुँचा। वे विमल को तरह-तरह से समझाने की कोशिश करतीं, पर विमल बात टालकर इधर-उधर चला जाता। माँ के पास अभी कोई ऐसा पक्का प्रमाण भी न था कि विमल की चोरी सिद्ध कर सके, पर विमल का स्कूल से देर से आना, जब-तब खाना न खाना, बस्ते में रुपए और दूसरी चीजें निकलना, इन सबसे माँ का संदेह विश्वास में बदल गया था।

माता-पिता अपने बच्चों के लिए स्वयं कष्ट सहते हैं और उन्हें सुविधाएँ देते हैं। वे उनके लिए अपना सारा सुख-चैन छोड़कर अच्छे से अच्छा प्रदर्शन करते हैं, पर जब बच्चे गलत करते हैं, गलत रास्ते पर चलते हैं तो गहरी पीड़ा पहुँचती है।

विमल की माँ की आँखों के आगे विमल के भविष्य का दृश्य घूम गया। विमल के हाथों में हथकड़ियाँ पड़ी हैं, पुलिस उसकी पिटाई करते हुए ले जा रही है, मुहल्ले वाले उस पर थू-थू कर रहे हैं। वह बौखला उठीं—"छिः मेरा बेटा ऐसा बनेगा ? क्या इसीलिए मैंने इसे जन्म दिया था ? यही देखने के लिए मैं जिंदा हूँ ?"

सोचते-सोचते विमल की माँ को चक्कर आ गए और वह बेहोश हो गईं।

उस दिन विमल सिनेमा देखने चला गया था। वह साँझ को घर लौटा, घर पर देखा माँ जमीन पर लेटी थीं। उसने सोचा सो गई होंगी, विमल ने बहुत आवाजें लगाईं, पर वह न उठीं। गहरी नींद आ गई होगी, यह सोचकर विमल ने उन्हें पास जाकर झकझोरा, पर वह तब भी न उठीं तो विमल का माथा ठनका। "जरूर कोई गड़बड़ है" वह सोचने लगा। आवाज़ें लगा-लगाकर जब वह थक गया तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रुँआसा हो गया। अंत में हारकर वह पड़ौसी के घर भाग गया। आस-पड़ौस के व्यक्ति इकट्ठे हो गए। "बेटे ! तुम्हारी माँ बेहोश हो गई हैं, अभी ठीक हुई जाती है।" एक व्यक्ति रोते हुए विमल को धैर्य बँधाने लगा।

जल्दी ही डॉक्टर आ गया। उसने माँ को तरह-तरह से जाँचा-परखा। "क्या पहले भी कभी ऐसा हुआ है ?" उसने पूछा।

"नहीं।" विमल ने सिर हिलाते हुए कहा।

डॉक्टर कहने लगा—"लगता है इन्हें किसी बात से गहरा सदमा पहुँचा है। इनका रक्तचाप बहुत बढ़ गया है। कोई ऐसी बात न करे, जिससे इन्हें दु:ख हो, नहीं तो खतरा बढ़ सकता है।"

"ऐसी तो कोई बात भी नहीं है।" पड़ौस की चंदो मौसी धीरे से बोली।

पर सच्चाई क्या है ? यह केवल विमल ही जानता था। लज्जा और ग्लानि से उसका सिर झुक गया।

डॉक्टर के बहुत प्रयास करने पर विमल की माँ को होश आया। डॉक्टर के जाने के बाद धीरे-धीरे सारे पड़ौसी भी चले गए। अब बीमार माँ के पास अकेला विमल रह गया। वह तन-मन से माँ की सेवा में जुटा था।

प्रतिदिन की भाँति आज भी विमल सोने के लिए माँ के पास ही लेटा था, पर उसकी आँखों में नींद न थी। माँ को कुछ हो गया तो यह सोच-सोचकर उसका दिल काँप रहा था। कभी वह भगवान से प्रार्थना करता—"हे ईश्वर ! मेरी माँ को ठीक कर दो। मैं मंदिर में जाकर प्रसाद चढ़ाऊँगा, तो कभी वह अपने मन में संकल्प करता कि अब मैं कभी चोरी नहीं करूँगा।" तभी उसने सुना, नींद में माँ बड़बड़ा रही थी—छि: मेरा बेटा ऐसा है यह, इसे हथकड़ी पहिना रहे हो । हे भगवान मुझे उठा ले शायद वह कोई सपना देख रही थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अब विमल अपने आपको रोक न सका। वह रोते हुए माँ से लिपट गया। माँ की आँख खुल गई। वह हड़बड़ाकर उठ बैठी। "क्या बात है बेटे ?" उन्होंने विमल से पूछा।

"माँ ! अब मैं कभी चोरी नहीं करूँगा। मैं बहुत ही अच्छा बच्चा बनूँगा। तुम्हें कभी दुःख नहीं पहुँचाऊँगा।" विमल सिसकते हुए बोला।

माँ ने उसे अपने हृदय से लगा लिया। उसका माथा चूमते हुए बोली—"बेटे ! तब तो तेरी माँ जी जाएगी। तुझे अच्छा बनाने के लिए मैंने कितने सपने देखे हैं ? कोई भी गलत काम करने से पहले तू अच्छी तरह सोच लेना कि उसका बुरा परिणाम देखने के लिए माँ जीवित नहीं रहेगी।"

"माँ ! मैं कभी भी गलत काम नहीं करूँगा और जब भी गलती करूँ तो तुम बता दिया करना।" विमल कहने लगा।

"अच्छा अब सो जाओ, बहुत रात बीत चुकी है।" विमल को थपकी देकर सुलाती हुई माँ बोलीं।

उस रात विमल ने माँ के मुख पर संतोष और दुःख की अपूर्व रेखा देखी। "मैं इसे बनाए रखने के लिए जीवन भर प्रयास करूँगा।" उसने मन ही मन संकल्प किया। फिर वह माँ के वक्ष में मुँह छिपाकर सोने का प्रयास करने लगा।

विमल की सेवा-सुश्रूषा से माँ जल्दी ही अच्छी हो गईं। जब वह स्कूल जाने लगा, तो उसने अपने पुराने साथियों का साथ छोड़ दिया। उन्होंने उसे बहुत प्रलोभन दिए, पर विमल अपने संकल्प पर दृढ़ रहा। यही नहीं, अब वह जी-जान से पढ़ाई में जुट गया। अब वह कक्षा में प्रथम आने लगा। स्कूल के विविध कार्यक्रमों में वह भाग लेता। अब वह बहुत-से पुरस्कार जीतकर घर लौटता तो माँ फूली न समातीं। अच्छाई हर जगह आदर पाती है। पड़ौसी भी अब विमल को बहुत प्यार करने लगे थे। वे बच्चों को उस जैसा बनने की प्रेरणा देते थे।



Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

न्याय की आड़ में

एक बार संजू खरगोश अपने बच्चों को जंगल में घुमाने ले गया। सुहावना मौसम था, बच्चे वहाँ घूमकर बड़े प्रसन्न हुए। जब वे घूम-फिरकर खूब थक गए, तो उन्हें बड़े जोर की भूख लगी। नन्हा रोहू कहने लगा—"पिताजी ! अब तो जल्दी से कुछ खाने के लिए लाइए।"

संजू बोला—"बच्चो ! तुम यहीं चुपचाप बैठे रहना। चारों साथ-साथ रहना, इधर-उधर मत दौड़ना। मैं जल्दी ही खाना लेकर आऊँगा।"

ऐसा कहकर संजू ने चारों बच्चों को एक शाल उढ़ा दिया। बहुत दिन हुए संजू को यह शाल पड़ा मिला था। अब जाड़ों में यह बड़ा काम आ रहा था।

संजू के जाने के बाद कुछ देर तक तो बच्चे चुपचाप बैठे रहे, पर उन चंचल बच्चों को चैन न पड़ा। सबसे पहले बड़कू निकला और बोला—"तुम सब यहीं पर रहना। मैं जरा झाड़ी से बाहर तक घूमकर आता हूँ।"

छोटू कहने लगा—"दादा ! मैं भी साथ चलूँगा।' वह भी फुदककर निकल आया।

तभी मोटू और रोहू बोले—"वाह भाई वाह ! हम क्यों नहीं चलेंगे ?" और वे दोनों भी शाल उतारकर झाड़ी से बाहर निकल आए।

अभी वे कुछ दूर ही बढ़े थे कि अचानक बड़कू ने पीछे मुड़कर देखा कि मुर्गी उनका शाल चोंच में दबाकर ले जाने की कोशिश कर रही थी। वह वहीं से चिल्लाया—"ठहरो-ठहरो ! यह शाल तो हमारा है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मुर्गी ने तब तक शाल कसकर अपने शरीर से लपेट लिया और बोली—"वाह ! तुम्हारा यह शाल कैसे है ? यह शाल तो मुझे पड़ा मिला है।"

"नहीं चाची यह हमारा है। हम चारों ही इसे ओढ़कर बैठे थे। अभी-अभी ही निकलकर बाहर आए हैं।" चारों बच्चे एक साथ बोले।

"यह मेरे पास है, मेरा है।" मुर्गी कर्कश स्वर में बोली और आगे बढ़ चली।

चारों बच्चों ने मिलकर उसका रास्ता रोक लिया। छोटू बोला—"हम तुम्हें शाल नहीं ले जाने देंगे। पिताजी आकर बहुत नाराज होंगे।"

मुर्गी बच्चों को धक्का देकर आगे बढ़ने ही वाली थी कि तभी बहुत-सी गाजर-मूली लेकर संजू खरगोश आ गया। बच्चे उसे देखते ही तुरंत बोल उठे—"पिताजी ! ये मुर्गी हमारा शाल छीन ले जा रही है।"

खरगोश बोला—"बहिनजी ! यह तो हमारा है।"

"नहीं, यह मेरा शाल है।" मुर्गी बोली। वह इस शाल को किसी हालत में छोड़ने के लिए तैयार न थी। वह मन में सोच रही थी कि अबकी बार जाड़े खूब मजे में कटेंगे। वह और उसके बच्चे बड़े आराम से बैठेंगे।

खरगोश बार-बार यही दुहराता रहा कि यह शाल उसका ही है, उसे दे दिया जाए। मुर्गी भी यही कहती रही कि यह मेरा है, मैं इसे नहीं दूँगी। वे दोनों अपनी-अपनी बात दुहराते हुए एक-दूसरे से झगड़ने लगे। जब संजू ने देखा कि मुर्गी किसी हालत में शाल नहीं देगी तो वह बोला—"चलो ! वनराज के पास चलें। वे ही अब हमारा न्याय करेंगे।"

"चलो चलें।" मुर्गी अकड़कर बोली।

खरगोश और मुर्गी की बात झाड़ी में छिपी एक लोमड़ी सुन रही थी। उन दोनों को देखकर उसके मुँह में पानी भर आया। वह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मन ही मन सोचने लगी कि कैसे उन्हें पाए ? सहसा ही एक उपाय सूझा और लोमड़ी उछल पड़ी।

खरगोश और मुर्गी थोड़ी दूर चलने के बाद ठिठककर खड़े हो गए। सामने बरगद के पेड़ के नीचे-ऊँचे चबूतरे पर एक लोमड़ी पालथी मारकर मौन बैठी थी। उसकी आँखें बंद थीं और बिना हिल-डुले बैठी थी।

दोनों बड़ी देर तक उसे देखते रहे। "लगता है यह पूजा कर रही है।" संजू बोला।

संजू की बात सुनकर लोमड़ी ने आँखें खोलीं और बोली—"बच्चे ! आज मेरा उपवास है। मैं ध्यान कर रही हूँ। यहाँ पर शोर न करो।"

"मौसी तुम कब से उपवास रखने लगीं ? कब से ध्यान करने लगीं ?" संजू आश्चर्य से अपने मुँह पर हाथ रखते हुए बोला।

"जब से तीर्थयात्रा करके आई हूँ, मेरा मन बदल गया है। मुझे बहुत शिक्षा मिली है। अब मैं अपने लिए जानवरों को मारती भी नहीं। छिः कितने घृणित होते हैं, वे जो दूसरों के निर्दयता से प्राण निकालकर अपना पेट भरते हैं, स्वाद लेते हैं ?" लोमड़ी एक साँस में कह गई।

"ओह ! मौसी तुम तो संत बन गई हो। काश, सभी तुम्हारे जैसे बन पाते और दूसरों को भी अपने जैसा समझ पाते।" खरगोश और मुर्गी बोले।

मुर्गी खरगोश से कहने लगी कि लोमड़ी से न्याय करा लेते हैं। वनराज कहीं किसी बात पर नाराज न हो जाएँ। संजू को भी पूरा विश्वास था कि लोमड़ी संत है। सही न्याय करेगी, इसलिए उसने हाँ कर दी।

खरगोश और मुर्गी दोनों अपना-अपना पक्ष रखने लगे। लोमड़ी बोली—"बच्चो ! यों मैं किसी के बीच में नहीं पड़ती, पर तुम दोनों बहुत कह रहे हो इसलिए तुम्हारी बात सुन लेती हूँ। यहाँ पास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आकर बैठो। धीरे-धीरे एक-एक करके अपनी बात बताओ, जिससे मैं सही न्याय कर सकूँ।''

दोनों ने अपनी-अपनी बात कही। लोमड़ी सारी बात जानकर गुस्से से भर उठी और बोली—''मैं गलत बात सह नहीं सकती। फिर उसने झपटकर मुर्गी को दबोच लिया और बोली—''तू दूसरों की चीज हड़पने की कोशिश करती है।''

मुर्गी कुड़कुड़ा रही थी और रोते-रोते कह रही थी—''मुझे छोड़ दो। अब कभी मैं ऐसा काम न करूँगी।''

तभी लोमड़ी ने पट्टा मारकर दूसरे हाथ से खरगोश को भी दबोच लिया।

''ओह ! मैं तो निरपराध हूँ। मुझे क्यों मारती हो ?'' खरगोश चीखा।

लोमड़ी हँसते हुए बोली—''मैंने न्याय किया है। तू उसका पारिश्रमिक है।''

अब मुर्गी और खरगोश दोनों की समझ में लोमड़ी की चाल आ गई थी। दोनों लोमड़ी को भला-बुरा कह रहे थे, जोर-जोर से रो रहे थे, सहायता के लिए चीख रहे थे।

इस शोर-शराबे से पास में ही झाड़ी के पीछे सोए हुए शेर की आँख खुल गई। उसने गुस्से से आँखें खोलकर देखा तो पीछे से लोमड़ी दिखाई दी। शेर जोर से गर्जा, लोमड़ी डर से काँप उठी। उसके हाथों से मुर्गी और खरगोश छूट गए। वे जान बचाकर वहाँ से भागे। अब थर-थर काँपते हुए मुर्गी और खरगोश शेर के सामने खड़े हुए थे।

''डरो मत ! मैं तुम्हें खाऊँगा नहीं। मेरा पेट भरा हुआ है। तुम मुझे बस यह बताओ कि शोर क्यों मचा रहे थे ?'' शेर ने आँखें लाल करके पूछा।

खरगोश ने काँपते हुए सारी बात बताई। काँपते हुए और शाल खरगोश को देते हुए लोमड़ी बोली—''अन्नदाता यह इसी का है। मुझे नहीं चाहिए इसी को दिए देती हूँ।''

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शेर गुस्से में भरकर बोला—"पहले ही दे देती, इतना उत्पात क्यों मचाया तूने ? दूसरों की चीजें हड़पकर सुखी रहना चाहती है ? याद रख ! दूसरों की चीजें हड़पने वाले का अंत सदा अधिक ही दुःखदाई होता है।"

मुर्गी शेर के पैरों पर गिरती हुई बोली—"क्षमा कीजिए महाराज ! मैं अब कभी ऐसा काम नहीं करूँगी।"

फिर शेर ने खरगोश की ओर मुड़कर कड़ककर पूछा—"क्यों रे ! क्या तू उस दुष्ट लोमड़ी से न्याय कराने लगा। सीधा मेरे पास क्यों नहीं आया ? क्या तुझे मेरे न्याय में विश्वास न था ?"

संजू काँपते हुए और दोनों हाथ जोड़कर झुकते हुए बोला—"वनराजजी ! आ तो हम आपके ही पास रहे थे। बीच में ही लोमड़ी मिल गई। हमें क्या पता था कि यह ऐसी ढोंगी होगी।"

शेर कहने लगा—"हाँ ! सो तो है ही, सज्जन और दुर्जन की पहिचान सरल नहीं होती। दोनों का व्यवहार तो एक-सा लगता है, पर दुष्टों का मन स्वार्थ, झूठ, छल-कपट से भरा होता है। अपने प्रारंभिक परिचय में तो वे अपने बनावटी व्यवहार से दूसरों को बड़ा आकर्षित कर लेते हैं, पर कभी न कभी उनका छल खुलता ही है, तब वे घृणा और तिरस्कार ही पाते हैं।"

"हाँ महाराज ! ऐसा ही है।" खरगोश और लोमड़ी विनत होकर बोले।

शेर बोला—"इसलिए किसी अनजान की बातों में नहीं आना चाहिए। बिना जाने-बूझे, समझे किसी से अधिक घनिष्ठता नहीं बढ़ानी चाहिए।

"आपकी शिक्षा सदैव याद रखेंगे।" खरगोश बोला।

और तब शेर को प्रणाम करके खरगोश और मुर्गी दोनों ही अपने-अपने घर लौट आए। रास्ते में संजू मुर्गी से कह रहा था—"दुष्ट तो दोषी हैं ही, जो दूसरों को मीठी बातों में फँसाकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपना स्वार्थ पूरा करते हैं। उनके कुचक्र में फँसने वाले भी कम दोषी नहीं जो पहले तो आँख-कान बंद करके, बिना सोचे-समझे उनकी बात पर विश्वास करते हैं और फिर अंत में पछताते हैं।''



Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सेठानी के गहने

रामा सेठानी को गहने पहिनने का बहुत शौक था। गले में सोने की जंजीर, हाथों में मोटी-मोटी चूड़ियाँ और कानों में बड़े-बड़े झुमके हमेशा पहिने रहती। उनके पति इसके लिए सदैव उन्हें टोका करते। वे कहते—"देखो ! आजकल का जमाना ठीक नहीं है। घर में भले ही सोने की इतनी चीजें पहिन लो, परंतु घर से बाहर निकलते समय तो इन्हें उतारकर रख जाया करो। इन्हें पहिनकर बाहर जाना खतरे को निमंत्रण देना है। पता नहीं कब किस मुसीबत में फँस जाओ ? दिन-दहाड़े लूटपाट होती रहती है।

पर रामा सेठानी हँसकर गर्दन नचाकर कहतीं—"वाह जी वाह ! कहीं नहीं डकैती पड़ रही ? इतने घने मौहल्ले में तो हम रहते हैं। मुझे इतनी बड़ी को भला कौन लूट ले जाएगा ? आप तो बेकार ही डरा करते हैं।"

सेठजी हँस देते और कहते—"मुझे तुम्हारी बुद्धिमानी पर तो भरोसा है, परंतु ठगों की नियत पर विश्वास नहीं है। अच्छे-भले आदमी को वे पता नहीं कब कैसे मूर्ख बना दें ?"

इस बात को वर्षों बीत गए। बात आई-गई हो गई।

सेठानी नित्य नियम से मंदिर जाया करती थीं। वहाँ भगवान से वे प्रतिदिन यही प्रार्थना करतीं कि उनका धन-वैभव बढ़े, व्यापार और फले-फूले। सेठानी इतनी जोर-जोर से बुदबुदाती कि आसपास बैठे व्यक्ति उनकी बात सुन लेते थे। मंदिर में आने वाले साधु-संतों से भी वे यही आशीर्वाद माँगा करतीं। मोहल्ले भर को यह पता लग गया कि सेठानी के मन में अधिक से अधिक पैसा पाने की बड़ी लालसा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक दिन किसी ने सेठानी का दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खोलने पर उन्होंने पाया कि गेरुए वस्त्र धारण किए साधु वेषधारी तीन व्यक्ति वहाँ खड़े हैं। "माँ ? कुछ भिक्षा देंगी ?" उनमें से एक साधु बोला।

हाँ-हाँ जरूर।" कहकर सेठानी अंदर भागी और खूब-सा आटा ले आई, पर दूसरे व्यक्ति ने मना करते हुए कहा—"हम तो साधु हैं, अपरिग्रही हैं इतने आटे का क्या करेंगे ? हम तो केवल उतनी ही भिक्षा लेते हैं, जितनी कि हमारी एक दिन की आवश्यकता होती है।"

"आप हैं भी तो तीन व्यक्ति यह तो अधिक नहीं है।" रामा सेठानी बोली।

बीच में खड़े ज़टा-जूटधारी साधु की ओर इशारा करके दूसरा व्यक्ति बोला—"माँ ! ये हमारे गुरुजी हैं। ये तो अन्न ग्रहण करते नहीं और हम भी दिन में एक बार थोड़ा-सा खाते हैं।"

रामा ने पूछा—"तुम्हारे गुरुजी अन्न नहीं खाते तो फिर क्या खाते हैं ?"

शिष्य बोला—"ये हिमालय पर तपस्या करते हैं। चार-छह वर्ष बाद कभी नीचे उतरते हैं, वायु ही उनका भोजन है।"

रामा उनकी बातें सुनकर सोचने लगी कि जरूर यह कोई पहुँचे हुए योगी हैं। तत्काल ही उसके मन में यह बात याद आ गई कि यदि इनकी कृपा हो जाए, तो वह संपत्ति बढ़ा सकती है। अतएव वह हाथ जोड़कर बोली—महाराज ! धन्य हैं आप। मुझे भी अपनी सेवा का सौभाग्य दीजिए।"

उत्तर शिष्य ने दिया। बोला—"गुरुजी तो बारह वर्ष से निरंतर मौन धारण किए हुए हैं। इसलिए उत्तर मैं ही दिए देता हूँ। इन जैसे पहुँचे हुए सिद्ध योगी की आप क्या सेवा करेंगी ? हाँ ! यदि आपकी कोई भी मनोकामना हो तो उसे ये अवश्य पूरा कर देंगे।"

सेठानी ने उसकी बातों पर विश्वास कर लिया। अब उनका लालच बढ़ गया। वह बोली—"महाराज ! आपके दर्शनों से ही मैं कृतार्थ हो गई। मैं ठहरी बाल-बच्चे वाली, आज की महँगाई के जमाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में गुजारा कठिनाइयों से ही हो पाता है। यदि आपकी कृपा हो जाती तो ।"

एक शिष्य महाराज की ओर देखता हुआ बोला—"महाराज प्रसन्न हैं आप पर। बताइए किस रूप में आप पर कृपा करें ?"

सेठानी गद्गद् होते हुए बोली—"अरे महाराज ! पहले अंदर तो आइए, आसन और जल ग्रहण कीजिए।"

तीनों अंदर आ गए। सेठानी ने उन्हें आदरपूर्वक बैठाया, मीठी वाणी से उनका सत्कार किया। फिर उनसे धन की वृद्धि की याचना की। एक शिष्य बोला—"आपके पास जो भी धन और सोना हो उसे ले आइए। एक घड़ा और उसका ढक्कन भी ले आइए। गुरुजी आपके सामने ही अपनी तंत्र विद्या से उसे बिना छुए ही दुगुना कर देंगे।"

सेठानी चिंतित होते हुए बोली—"पर स्वामीजी ! सेठजी तो इस समय बाहर गए हैं। तिजोरी की चाभी उन्हीं के पास रहती है, मैं क्या करूँ ?"

"ओह ! तो हम चले फिर।" उठते हुए एक शिष्य बोला।

इतना अच्छा अवसर बेकार ही हाथ से निकल गया। यह सोचकर सेठानी दुःखी ही थी कि सहसा उनकी निगाह हाथ की सोने की चूड़ियों पर गई। उन्होंने तीनों को रुकाते हुए कहा—"महाराज ! मेरे पास इस समय यह थोड़ा-सा सोना है, इसी को दिए देती हूँ।"

शिष्य ने पूजा का सामान और घड़ा आदि लाने के लिए कहा। सेठानी दौड़-दौड़कर सामान लाती रही। घर में उसका चौदह वर्ष का किशोर पुत्र रोहित भी था। उसे यह सब अच्छा न लगा। उसने इन सबके लिए माँ को मना भी किया, पर सेठानी ने उसे यह कहकर डाँट दिया कि तुम अभी बालक हो, सिद्धों के चमत्कार को नहीं समझते।

शिष्यों ने दीपक जलाया, धूपबत्ती जलाई। गुरुजी स्पष्ट स्वर में मंत्र बोलते रहे और हाथों से जादू-टोना करते रहे। तब सेठानी के ही सामने एक शिष्य ने सोने का हार, चूड़ी, कुंडल, अँगूठी आदि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सभी घड़े में डाल दिए। दूसरे ने ढक्कन लगाकर उसके मुँह पर कपड़ा कस दिया। दस मिनट तक वे फिर न जाने क्या-क्या पाठ करते रहे ? तब एक शिष्य बोला—"माँ ! कल प्रातःकाल नहा-धोकर पूजा करके इस घड़े को खोलना। आपको गुरुजी का चमत्कार दिखाई देगा। आपका सौभाग्य है जो महाराज आप पर इतने अधिक प्रसन्न हुए हैं।"

तीनों विदा लेकर चले गए। उन्होंने न सेठानी के घर अन्न खाया, न उनसे कोई और वस्तु ही ली थी। सेठानी उनकी निस्पृहता से बहुत प्रभावित थी वह सोच रही थी कि आज के जमाने में ऐसे साधु मिलते ही कहाँ हैं ?

उधर रोहित को चैन न था। वह बराबर सोचे जा रहा था कि माँ आज कहीं ठग न जाए। उसने देखा कि कहने-सुनने का माँ पर कोई असर नहीं है तो वह चुप हो गया। उसने मन ही मन कुछ निर्णय लिया। जैसे ही वे गेरुआ वस्त्रधारी व्यक्ति घर से बाहर निकले, तो रोहित माँ से बिना कुछ कहे उनके पीछे लग गया। वह छिपकर उनके पीछे-पीछे बढ़ता गया। वे तीनों शहर से दूर निकल गए। जंगल में एक टूटे-फूटे खंडहर में जाकर वे रुके। जाते ही उन्होंने नकली जटा-जूट उतार फेंके। गुरु बने आदमी ने अपने कुर्ते की बाँह से रोहित की माँ के गहने निकाले। वे तीनों अट्टहास करते हुए कहने लगे—"कुछ दिन तक तो चैन की छनेगी।"

अब रोहित ने और देर करना उचित न समझा। वह छिपते-छिपाते तुरंत वहाँ से निकला। जंगल से बाहर आते ही रिक्शा किया और जल्दी से थाने पहुँचा। वहाँ उसके दोस्त प्रभात के पिताजी इन्स्पेक्टर थे। उन्होंने ध्यान से रोहित की सारी बातें सुनीं। तुरंत ही वे रोहित को लेकर अपने दल-बल के साथ उस स्थान पर पहुँचे।

उन तीनों आदमियों को तो सपने में भी यह आभास न था। वे शराब के नशे में धुत पड़े थे। पुलिस को सामने खड़ा पाकर वे हक्के-बक्के से देखते रह गए और आँय-बाँय बकने लगे। उन्हें इतना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधिक नशा चढ़ा हुआ था कि उनके मुँह से ठीक आवाज भी नहीं निकल पा रही थी। पुलिस ने उनके हाथों में हथकड़ी डाल दी और ले जाकर थाने में बंद कर दिया।

शाम को प्रभात के पिताजी सारे गहने लेकर रामा सेठानी के यहाँ पहुँचे। अपने गहने देखकर वह आश्चर्य में पड़ गई। उन्होंने जल्दी से घड़ा खोला, पर वह खाली पड़ा था। वह समझ न पा रही थी कि घड़ा कैसे खाली हो गया और कैसे उनके सारे आभूषण प्रभात के पिताजी के हाथों में आ गए ? रोहित ने भी घर जाकर माँ को कुछ नहीं बताया था।

इन्स्पेक्टर साहब ने रामा को सारी बातें बताईं। उन्हें सुनकर वे भौंचक्की रह गईं। उन्होंने तो सपने में भी न सोचा था कि वे तीनों गेरुए कपड़े पहने ठग होंगे, वे तो उन्हें पहुँचा हुआ संन्यासी समझ रही थीं।

प्रभात के पिता सेठानी को समझाते हुए बोले—"भाभीजी ! साधु यदि सच्चा है तो वास्तव में आदर का पात्र है, परंतु गेरुए कपड़े पहिन लेने से ही कोई संन्यासी निस्पृही व्यक्ति दुर्लभ है। जो हैं वे यों घर-घर घूमते नहीं फिरते। वे लोगों को लालच नहीं देते, उन्हें आत्म-कल्याण का रास्ता दिखाते हैं।"

"हाँ ! आपकी बात ही ठीक है।" रामा सेठानी बोली।

तभी हँसता हुआ रोहित भी वहाँ आ गया। प्रभात के पिताजी कहने लगे कि रोहित की सूझ-बूझ और बुद्धिमानी के कारण ही वे आज एक बड़े धोखे से बची है।

रोहित मुस्कराते हुए बोला—"माँ ! व्यक्ति धनी बनता है अपने श्रम से, कौशल से, बुद्धि से। दूसरा कोई किसी को धनवान नहीं बना सकता।"

रामा सेठानी चुपचाप रही। इस विषय में वे कहती क्या ? पर उनकी समझ में एक बात नहीं आ रही थी कि उस आदमी ने उनकी आँखों के सामने ही घड़े में गहने डाले थे फिर वे उसके साथ में कैसे चले गए ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रभात के पिताजी कहने लगे—"भाभीजी ! यह और कुछ नहीं हाथ की सफाई मात्र होती है। देखा नहीं अपने जादूगर कैसे-कैसे अनोखे करतब दिखाता है ?"

रामा सेठानी की समझ में अब ठगी की सारी बात आ गई थी। उस दिन से उनकी दो बातें छूट गई—हर समय गहने पहने रहना और हर किसी अपरिचित की बात पर बिना सोचे-समझे अंधा विश्वास कर लेना।



Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सच्चा प्रायश्चित

शिवालिक पर्वत की तराई में एक वन था। वहाँ अनेक प्रकार के पशु-पक्षी रहा करते थे। बहुत-से तोते भी झुंड बनाकर वहाँ रहते थे। वे सभी मिल-जुलकर बड़े प्रेमपूर्वक रहते। प्रातःकाल वे सभी दाने की तलाश में साथ-साथ उड़ जाते। वे साथ-साथ खाते-पीते, घूमते। साँझ होते ही सभी घर लौट आते। रात में उनकी गोष्ठी होती, गान प्रतियोगिता होती। इस प्रकार हँसी-खुशी भरे दिन बीत रहे थे।

एक दिन की बात है। साँझ के झुटपुटे में वे सभी गोष्ठी में बैठे थे। सहसा ही उन्हें किसी तोते की व्याकुलता भरी पुकार सुनाई पड़ी। सभी की दृष्टि इधर-उधर घूमने लगी। पेड़ पर अनेक तोते उड़कर देखने लगे कि आवाज कहाँ से आ रही है ? उनका कौन साथी संकट में फँस गया है ? तभी सहसा ऊपर से एक तोता वृक्ष की जड़ के पास गिरा। वह खून से लथपथ था। जोर-जोर से साँस ले रहा था, हाँफ रहा था, डर से काँप रहा था। तोतों ने देखा ऊपर एक बाज उस घायल तोते को झपटने के लिए चक्कर काट रहा है। उन सभी ने जोर से आवाज करके इधर-उधर उड़ना प्रारंभ कर दिया। इससे बाज को शिकार का भ्रम हुआ और तेजी से उड़ गया। अब वे उस घायल तोते के पास आए। तोतों का नेता सर्वज्ञ उसके पास आया। स्नेह-सहानुभूति से उसके सिर पर अपना पंजा फिराते हुए बोला—"भाई ! घबराओ नहीं, हम सबने बाज को भाग दिया। अब तुम बिलकुल सुरक्षित हो। आँखें खोलो और देखो यहाँ सब तुम्हारे ही साथी हैं।"

हरित नाम के उस घायल तोते ने आँखें खोलीं और देखा कि अनेक अपरिचित साथियों से घिरा है। उसने कुछ कहने के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए मुँह खोला, परं आवाज न निकली। सर्वज्ञ ने कुछ इशारा किया, अनेक तोते हरित पर अपने पंखों से हवा करने लगे। कुछ तोते पानी लाकर उसके मुँह में डालने लगे। तब कहीं बड़ी देर बाद जाकर वह स्वस्थ हुआ। एक तोते ने उसके आगे अनार रख दिया। सर्वज्ञ कहने लगा—"भाई ! पहले इसे खा लो। स्वस्थ हो जाओ फिर तुम्हारा परिचय प्राप्त करेंगे।"

तोतों का इतना स्नेह और सौजन्यतापूर्ण व्यवहार पाकर हरित की आँखों में आँसू भर आए। वह बोला—"ओह ! मुझ अपरिचित के भी प्राणों की रक्षा तुमने की है। मुझसे तुम सभी कैसा अपनत्व भरा व्यवहार कर रहे हो ? तुम्हारा यह उपकार मैं जीवन भर न भूल पाऊँगा।"

सर्वज्ञ कहने लगा—"अरे भाई ! कैसी बात सोचते हो ? क्या परिचय, क्या अपरिचय हम सभी में एक ही आत्म-तत्त्व-चेतन-तत्त्व है। परिचय-अपरिचय की संकुचित सीमाएँ तो हम बना लेते हैं और अपने आपको भी सीमित कर लेते हैं।"

"ओह ! कितने ज्ञानी हो तुम ? कितने महान् विचार हैं तुम्हारे ?" हरित के मुँह से निकला।

"अब तुम ज्ञानी-अज्ञानी, महान और तुच्छ ही देखते रहोगे या कुछ खाओगे भी।" ऐसा कहते हुए हरित के मुँह में अनार के दाने रखते हुए सर्वज्ञ बोला।

अनार खाकर हरित अपने आपको बहुत कुछ स्वस्थ अनुभव करने लगा। तोतों के स्नेहयुक्त व्यवहार से वह अपनी पीड़ा भूल गया। उसने अपनी कथा विस्तार से सुनाई शिकारी उसके पत्नी-बच्चों को पकड़कर ले गए थे, उन्हें बचाते हुए वह घायल हो गया था। उन्हें तो शिकारी के चँगुल से बचा न पाया, उल्टे एक बाज उसके पीछे लग गया और मुझे भय ने अधमरा बना दिया।

"परिवार से रहित मैं अभागा तुम्हारे सामने हूँ। मेरा इस संसार में कोई नहीं है।" कहकर हरित रोने लगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सर्वज्ञ उसे समझाने लगा—"भाई ! परिवार के नष्ट हो जाने पर तुम्हारा यों दुःखी होना स्वाभाविक है। आत्मीय जनों का बिछोह हमें व्याकुल बना देता है। हमारे हृदय को भय देता है, पर यह तो ईश्वर का विधान है। इसमें किया भी क्या जा सकता है ? धैर्य से काम लो। देखो ! हम सब तुम्हारे ही अपने साथी हैं।'

ऐसा कहकर सर्वज्ञ ने हरित को अपने पंजों में छिपा लिया। सहानुभूति पाकर हरित फफक-फफककर रो उठा। उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह चली। 'रोने से मन का दुःख कुछ हलका हो जाएगा। यह सोचकर सर्वज्ञ ने भी उसे रोका नहीं।

सर्वज्ञ और दूसरे तोतों के आग्रह करने से अब हरित तोतों के उस झुंड के साथ रहने लगा था। सर्वज्ञ उसका ध्यान रखता, वह उसे हर समय अपने साथ रखता। उसे बातों में ही उलझाए रखता, जिससे उसे अपने परिवार की बहुत अधिक याद न आए। साथियों के साथ दुःख के क्षण भी आसानी से कट जाते हैं। समय भी धीरे-धीरे पीड़ा को कम करता है। कुछ ही दिनों में हरित सर्वज्ञ के साथ खूब घुल-मिल गया। पत्नी और बच्चों के बिछोह का दुःख भी कुछ कम होने लगा।

हरित स्वभाव से बड़ा ही मिलनसार था। वह जल्दी ही सर्वज्ञ का घनिष्ठ मित्र बन गया। सर्वज्ञ अब एक पल को भी उसे आँखों से दूर न करता। हर काम में उसकी सलाह लेता। हरित को दिए गए इस सम्मान से दूसरे कई तोते चिढ़ने लगे और वे उसे झुंड से ही निकालने का षड्यंत्र रचने लगे। दुर्जनों का स्वभाव होता है कि वे दूसरों का सुख और सम्मान देख नहीं सकते।

कुछ दिन पहले ही तोतियों ने अंडे दिये थे। अब उनके बच्चे कुछ बड़े हो चले थे। नन्हें-नन्हें प्यारे बच्चे बड़े सुंदर लगते थे। तोती भी अब तोतों के साथ दाने की तलाश में जाना चाहती थीं, पर बच्चों को किस पर छोड़कर जाएँ—यही एक समस्या थी। सर्वज्ञ कहने लगा—"अरे ! इसमें चिंता की क्या बात है ? बच्चों के पास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हरित रहेगा। वह उनकी देखरेख करेगा, अच्छी बातें सिखाएगा, अच्छे संस्कार देगा।"

कुछ तोतों को सर्वज्ञ की यह बात बुरी लगी। अब तक जो बच्चों की देखभाल के लिए रहते आए थे, उन्हें पता लगा कि उनका अधिकार छिन गया है पर वे मुँह से कुछ न बोले।

दूसरे दिन से हरित बच्चों के पास रहने लगा। वह उन्हें खूब खेल खिलाता, कहानी सुनाता, उड़ना सिखाता और अच्छी बातें बताता। बच्चे हरित चाचा से बहुत हिलमिल गए। यह देखकर बच्चों के माता-पिता और सर्वज्ञ बहुत ही अधिक खुश थे। "हम सबने सुयोग्य हाथों में अपने बच्चों को सौंपा है।" यह सोचकर उन्हें प्रसन्नता थी।

तोते तो प्रातःकाल ही चले जाते थे। पेड़ पर रह जाते थे हरित, छोटे-छोटे बच्चे और अजित नाम का एक तोता। अजित का मुख्य काम बच्चों के लिए दाना-पानी लाना और हरित की सहायता करना था।

एक दिन की बात है। अजित दाना लेने गया, हरित बच्चों को खिला रहा था। तभी कहीं से एक वनविलाव आया। वह भी उसी पेड़ के नीचे बैठकर लगा आँसू बहाने। जब वह बहुत देर तक चुप न हुआ तो हरित से न रहा गया। वह बोल ही पड़ा—"भाई ! क्यों रोते हो ! तुम्हें क्या दुःख है ?"

वन विलाव ने गर्दन ऊँची उठाकर हरित की ओर देखा। फिर वह और भी जोर से रोते हुए बोला—"मैं भाग्यहीन तुमसे क्या कहूँ ? मेरे भाग्य में तो बस अब रोना ही शेष बचा है। जिस जंगल में हम रहते थे वहाँ दावाग्नि लग गई। मेरे पत्नी-बच्चे, माता-पिता संगी-साथी सभी जलकर भस्म हो गए। मैं जंगल से बाहर गया हुआ था। वहाँ से लौटा तो यह दिल दहला देने वाला समाचार सुना हाय ! मैं अभागा भी उन सबके साथ ही क्यों न जलकर मर गया।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वनविलाव के आँसू देखकर, उसकी करुण-कथा सुनकर हरित का मन पिघल उठा। अपनी और बच्चों की सूरत उसकी आँखों के आगे नाच उठी। उसने तरह-तरह से वनविलाव को धैर्य बँधाया। हरित के बहुत समझाने से वह चुप हुआ। फिर जाते-जाते पूछने लगा—"भाई ! तुम्हारी बातों से ऐसा लगा जैसे मेरे हृदय के घावों पर ठंडी मरहम लगा दी गई हो। क्या मैं कभी-कभी तुमसे मिलने के लिए आ सकता हूँ ?"

"हाँ-हाँ ! क्यों नहीं। जब भी तुम्हारा मन चाहे आ जाना।" हरित बोला।

दूसरे ही दिन से हरित के पास वनविलाव का नियमित रूप से आना प्रारंभ हो गया। कभी-कभी वह पेड़ की निचली डाल पर बैठ जाता था। शुरू में हरित ने दो चार बार उससे बच्चों की निगरानी भी कराई। फिर वह उस ओर से लापरवाह हो गया। वनविलाव की मीठी-मीठी बातों पर वह पूरी-पूरी तरह से विश्वास कर बैठा।

वनविलाव तो इसी मौके की तलाश में था। एक दिन वह हरित को बातों में लगाकर उसकी निगाह बचाकर पाँच बच्चे उठाकर चुपचाप पेड़ से नीचे उतर आया। कुछ दूर जाकर उसने बच्चों की गर्दन मरोड़ी, पंख नौंचे और सभी को चट कर गया।

कुछ देर बाद अजित दाना लेकर आ गया। खाना खिलाने के लिए जब बच्चों को इकट्ठा किया, तो पाँच बच्चे कम निकले। "अरे ! कहाँ गए वे अभी तो यहीं थे।" कहकर हरित उन्हें ढूँढ़ने लगा। उसने पेड़ की हर डाली पर बच्चों को ढूँढ़ा उन्हें बहुतेरी आवाजें लगाईं, पर सब कुछ बेकार। अजित-हरित बच्चों को ढूँढ़ने पेड़ से आगे बढ़े। थोड़ी दूर पर अजित ने उनके नुचे-खुचे पंख देखे। अजित उस वीभत्स दृश्य देखकर अपने पर नियंत्रण न रख सका। वह जोर-जोर से रोने लगा। तभी उधर से तोतों का झुंड भी वापिस घर लौट आया। अजित को रोते देखकर सभी तोते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वहीं ठिठककर रुक गए। अजित ने क्रोध में भरकर बताया कि किस प्रकार हरित के यहीं रहते हुए पाँच बच्चे मारे गए ? यह सुनकर कुछ तोते जो हरित से पहले ही चिढ़े बैठे थे, भड़क उठे। वे कहने लगे कि हमें तो कभी भी यह भला न लगा था। जरूर इसने चालाकी से बच्चे मरवाए हैं। वे हरित पर विविध आरोप लगाने लगे। कोई कहने लगा कि इसने लालच में आकर बच्चे किसी को बेचे हैं। दूसरा बोला कि इसमें जरूर ही इसका कुछ स्वार्थ होगा। फिर तीसरा बोला—"बड़ा ही ढोंगी बना फिरता था, आज तो इसकी सारी ही पोल खुल गई।

सर्वज्ञ को तोतों की इन बातों पर विश्वास न हो पा रहा था। वह सोच रहा था कि इतने सौम्य स्वभाव वाला हरित धोखेबाज तो नहीं होना चाहिए। उसने कुछ कहने के लिए मुँह खोला, पर दूसरे तोतों ने उसे यह कहकर चुप करा दिया कि आपके विश्वास और उदारता के कारण ही आज हमें अपने प्यारे बच्चों की यह दुर्दशा देखनी पड़ी है।

ये तोते गुस्से में भरकर तेजी से हरित के पास पहुँचे और लगे उसे अपनी चोंचों से मारने। इतने ढेर सारे तोतों के एक साथ प्रहार से हरित बहुत ही अधमरा-सा हो गया था। वह इस हमले का कारण न समझ पाया और कराहते हुए पूछने लगा—"ओह ! मुझे मारते क्यों हो ?"

"दुष्ट, पापी, हत्यारे ! हमारे बच्चों को मारकर पूछता है कि तुझे क्यों मार रहे हैं ? तोते उसे चोंचों से घायल करते हुए बोले। फिर उन्होंने हरित को जोर से धक्का दिया और कहा—"अब तू तुरंत भाग जा यहाँ से, कलमुँहे फिर कभी इधर झाँकने की कोशिश न करना।"

हरित पेड़ों के पीछे खाई में जाकर औंधे मुँह गिर पड़ा। वह अपमान और लज्जा से तिलमिला रहा था। वह समझ गया था कि तोतों से अब कुछ कहना बेकार है। निर्दोष होते हुए भी उन्होंने उसकी एक न सुनी थी। हरित अपने आप को धिक्कारने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लगा—"अरे ! उन्होंने मेरे साथ उचित ही किया। कितने विश्वास से उन्होंने मुझे अपने बच्चे सौंपे थे, पर मैं उनकी रक्षा न कर सका। हाय ! एक अपरिचित पर मैंने अति विश्वास क्यों किया ? उसका फल तो इस रूप में अब मुझे भुगतना ही चाहिए। जो दूसरों पर आँख बंद करके अत्यधिक विश्वास करता है, वह कभी न कभी छला ही जाता है।"

ऐसा कहकर हरित ने बहुत हताश होकर पास में पड़ी सिला पर सिर पटक दिया। "अब मेरा मर जाना ही ठीक है।" कहकर बारंबार पत्थर पर सिर पटकने लगा। तभी सामने से आती हुई एक गिलहरी ने तेजी से आगे बढ़कर उसका सिर अपने पंजों में थाम लिया। अब हरित का सिर पटककर घायल करना रुक गया। उसने तड़पते हुए गिलहरी की ओर देखा और कहा—"कौन हो तुम ? क्यों मुझे रोकती हो ?"

ज्ञानी-दार्शनिक-सी गिलहरी बोली—"आत्महत्या पाप है, कायरता है। यदि जीवन में कोई गलती की है, तो उसे सुधारो, उससे सबक लो और नए उत्साह से फिर जुट जाओ।"

"कैसा उत्साह ? मुझे अभागे का अब मर जाना ही ठीक है।" ऐसा कहकर हरित फूट-फूटकर रो उठा।

गिलहरी बड़ी देर तक उसकी पीठ पर हाथ फिराती रही। उसके आँसू पोंछती रही। हरित को गिलहरी ने धैर्य बँधाया और अपने घर ले गई।

गिलहरी के स्नेह और सहानुभूति को पाकर हरित अपना दुःख भूलने लगा। दोनों जल्दी ही घुल-मिल गए, जैसे न जाने कितने पुराने साथी हों।

एक दिन दोपहर के समय गिलहरी और हरित पेड़ पर बैठे गपशप कर रहे थे। सहसा ही हरित का ध्यान नीचे गया। पेड़ के नीचे एक भयंकर-सा दीखने वाला, लाल-लाल आँखों वाला शिकारी बैठा था। उसके पास जाल में बहुत से तोते बँधे पड़े थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अरे ! यह तो सर्वज्ञ और उसके साथी हैं।" सहसा ही हरित के मुँह से निकला।

"धोखे से ये शिकारी के जाल में फँस गए हैं। अब यह शिकारी इन्हें मार डालेगा।" ऐसा कहकर हरित उदास हो गया। वह बार-बार यही सोचने लगा कि इन्हें कैसे बचाया जाए ? फिर कुछ दृढ़ निश्चय-सा करके हरित गिलहरी से बोला—"दीदी ! मैं अपने प्राण देकर भी आज इनकी रक्षा करूँगा।"

गिलहरी ने उसके मन की थाह लेने के लिए पूछा—"पर इन्होंने तुम्हारा कितना अपमान और तिरस्कार किया था ?"

हरित कहने लगा—"इन्होंने मेरे साथ जो बुरा किया था उसे मैं भूलता हूँ। उन्होंने मुझे अच्छा व्यवहार किया, उसका मैं आज मूल्य चुकाऊँगा। बुराई करने वाले के साथ बुरा तो सभी करते हैं, परंतु महानता इसमें है कि उसके साथ भी अच्छा किया जाए। यदि कोई दूसरा गलत करता है तो करे, हम क्यों अच्छाई छोड़ें ?"

हरित के इतने ऊँचे विचार सुनकर गिलहरी भाव-विभोर हो उठी। उसने अपने पंजे से हरित का पंजा कसकर दबाया और साहस के साथ बोली—"इस अच्छे काम में मैं तुम्हें पूरा-पूरा ही सहयोग दूँगी।"

दोनों ने आपस में धीरे-धीरे कुछ निश्चय किया। तभी उन्होंने देखा कि शिकारी पेड़ की ठंडी छाया में सो गया है। दोनों तेजी से नीचे उतरे। हरित शिकारी के सामने ऊँची डाल पर बैठ गया, जिससे कि आँख खुलते ही गिलहरी को बता दे। गिलहरी ने भी मित्र के लिए अपने प्राणों को खतरे में डाल दिया। वह स्वयं उसकी परवाह न करके शिकारी के पास रखे जाल के पास पहुँची। अपने तेज दाँतों से वह जल्दी-जल्दी जाल काटने लगी। थोड़ा ही देर में जाल कट गया और एक-एक करके तोते उसमें बाहर निकलने लगे। वे गिलहरी के अत्यधिक कृतज्ञ थे। वे उससे कुछ कहने ही जा रहे थे कि गिलहरी ने पास में शिकारी को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिखाकर उन्हें चुप रहने का इशारा किया। फिर उसने तोतों के पास बैठे हरित को इशारे से दिखाया। सर्वज्ञ को सारी बात समझते देर न लगी। तोते हरित के पास उड़ना ही चाह रहे थे कि उसने पंजा उठाकर उन सभी को पेड़ के ऊपर बैठने का संकेत दिया। सर्वज्ञ भी समझ गया कि जब तक सारे तोते, गिलहरी और हरित राजी-खुशी ऊपर न आ जाएँ, तब तक कुछ भी बोलना उचित नहीं। शोर से यदि शिकारी की आँख खुल गई तो सब किया-धरा चौपट हो जाएगा।

जल्दी ही सारे तोते जाल से छूटकर डाल पर आ बैठे। गिलहरी बड़ी प्रसन्न होती हुई ऊपर आ गई। हरित उसका बड़ा ही कृतज्ञ था। वह उससे बोला—"दीदी ! तुम्हारा आभार व्यक्त करने के लिए मेरे पास कुछ भी शब्द नहीं हैं।" इतना कहकर हरित का गला रुँध गया।

हरित आगे और कुछ कहता कि गिलहरी हँसती हुई उसकी चोंच हिलाते हुए बोली—"शब्द तो मेरे पास भी नहीं हैं मिट्ठू मियाँ। बुरा करने वाले का भी तुम भला चाहते हो। ईश्वर सदैव तुम्हें ऐसी बुद्धि दें।"

गिलहरी की बात सुनकर सर्वज्ञ और दूसरे तोतों का मुँह फक पड़ गया। हरित के साथ किए गए अपने व्यवहार की बात सोचकर वे ग्लानि और पश्चात्ताप से भर उठे। अब वे सोचने लगे कि वास्तव में हरित उनका बुरा चाहता, तो कभी वह उन्हें जाल से न छुड़ाता। अपने सारे अपमान को भुलाकर भी उसने उनकी रक्षा की है, वे सभी उससे क्षमा माँगने लगे। हरित बोला—"नहीं भाइयो ! गलती मेरी ही थी। वह बच्चे निश्चित ही वनविलाव ने मारे होंगे। मैंने बिना परख उस पर क्यों विश्वास किया ? क्यों उसे अपना अंतरंग मान लिया ? सहायता और सहानुभूति तो उसी को देनी चाहिए, विश्वास उसी पर करना चाहिए और अपना घनिष्ठ उसी को ही बनाना चाहिए, जिसे विविध स्थितियों में हमने अच्छी तरह परख लिया हो।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सर्वज्ञ कहने लगा—"हरित भाई ! गलती हमारी भी तुमसे कम न थी। हमने भी तो बिना सोचे-समझे गुस्से में भरकर तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार किया था। क्या हमें नहीं सोचना था कि सारी स्थिति देखें-परखें। वह सदैव पछताता है जो किसी विशेष परिस्थिति के सहसा ही आ जाने पर बिना सोचे-समझे, केवल उत्तेजना में भरकर व्यवहार करता है। तुम समझ न पाओगे कि तुम्हारे यों चले आने के बाद मुझे कितनी पीड़ा हुई।" कहते-कहते सर्वज्ञ की आँखों में आँसू झलक आए।

हरित ने अपना पंजा आगे बढ़ाकर उसे गले से लगा लिया। दोनों मित्र एक-दूसरे से लिपटकर रोने लगे। उनका यह मिलन देखकर गिलहरी और दूसरे तोतों की आँखें भी नम हो उठीं।

कुछ देर बाद अपने आपको नियंत्रित रखकर सर्वज्ञ हरित से कहने लगा—"भाई ! चलो अब तुम हमारे साथ ही रहना। तुम्हारे बिना हमारा घर सूना है।"

यह सुनकर गिलहरी जड़-सी हो गई। थोड़े ही दिनों में हरित इसे इतना अधिक घुल-मिल गया था कि बिना उसके रहने की अब वह कल्पना भी न कर सकती थी। हरित ने एक पल को गिलहरी की ओर देखा और बोला—"नहीं भाई ! अब मैं दीदी को छोड़कर नहीं जाऊँगा।"

अब सारे ही तोते एक साथ बोल उठे—"तुम और दीदी दोनों ही चलो।"

सर्वज्ञ हँसते हुए बोला—"हाँ नहीं तो फिर हम सभी को यहाँ आना पड़ेगा। यह तो छोटा-सा पेड़ है, हम सभी इस पर ठीक से रह न पाएँगे। रोज-रोज शिकारी पकड़कर ले जाया करेगा। फिर तुम और दीदी दोनों प्रतिदिन हमें बचाते रहना।

"छिः ! ऐसी गंदी बात नहीं करते।" गिलहरी बोली।

"शिकारी की आँख खुले उससे पहले ही हम यहाँ से उड़ चलें।" सर्वज्ञ बोला।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आगे-आगे सर्वज्ञ और दूसरे तोते तथा उनके पीछे हरित और गिलहरी चल पड़े सहयोग भरा परिवार बसाने। अबकी बार यह उन्होंने संकल्प कर लिया था कि वे एक-दूसरे पर संदेह न करेंगे, अपितु एक-दूसरे को निकट और प्यार से समझेंगे, जिससे कभी मनोमालिन्य न हो।



Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफलता का साधन

जंगल में बरगद का एक घना वृक्ष था। उस पर पक्षी घोंसले बनाकर रहा करते थे। उसी पर एक बूढ़ा गिद्ध था। उसे घायल अवस्था में पक्षियों ने बचाया था, तभी से वह उनके पास रहता था। सारे पक्षी तो सुबह होते ही दाने की खोज में निकल जाते। बूढ़ा गिद्ध उनके बच्चों की देखभाल किया करता।

एक दिन की बात है। झुंड बनाकर सारे पक्षी लौट रहे थे। तभी सहसा उनकी निगाह नीचे जमीन पर पड़े चावलों पर गई। वे उन्हें खाने के लिए उतरने लगे। उनके नेता प्राशु ने मना भी किया—"देखो ! यहाँ जंगल में इतने चावल कहाँ से आए ? जरूर इसमें कुछ धोखा है।"

परंतु नेता की बात पर विचार करना तो दूर, उल्टे उन्होंने उसका मजाक बनाया—"दादाजी ! आप तो हर जगह संदेह करते रहते हैं। आप चाहें तो यहीं रुक जाइए। हम इन चावलों को खाकर बस अभी आए।"

नेता बेचारा चुप हो गया। पक्षी नीचे उतरे और जाल में फँस गए, पर अब पछताने से क्या लाभ ? लालच और मूर्खता दोनों बहुत बड़े अवगुण हैं। स्वार्थ की आशा से प्राणी इनमें फँसता है और फिर अंत तक ही पछताता है।

पक्षियों के जाल में फँसते ही झाड़ियों के पीछे छिपा बहेलिया बाहर निकला। इतने सारे पक्षियों के एक साथ मिलने पर वह बड़ा प्रसन्न था। उसने जाल समेटा और चलते बना।

गिद्ध बैठा-बैठा पक्षियों की प्रतीक्षा करता रहा। साँझ घिरी, रात हुई, पर उन्हें न आना था—न आए। बच्चे भूख से चीं-चीं करने लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गिद्ध बेचारा बड़ा परेशान हुआ। वह समझ गया कि पक्षी जरूर किसी संकट में फँस गए हैं। वह जैसे-तैसे जाकर उनके लिए खाना लाया।

बच्चे तो खा-पीकर सो गए, पर गिद्ध की आँखों में आज नींद न थी। उससे कुछ खाया-पिया भी न गया था। वह सोचने लगा कि पक्षी न जाने कब तक लौटकर आएँ, तब तक बच्चों के लिए कोई व्यवस्था करनी होगी। वह खाना लेने भी न जा सकता था, क्योंकि एक तो वह बूढ़ा था, जल्दी ही थक जाता था। दूसरे नन्हें बच्चों को इस प्रकार अकेला नहीं छोड़ा जा सकता था। वह देर तक विचार करता रहा और अंत में उसने हल निकाल ही लिया। कठिनाई में रोने-झींकने और परेशान होने से मुसीबत बढ़ती ही है, पर सोच-विचारकर काम करने से संकट दूर करने का कोई न कोई उपाय निकल ही आता है।

कुछ बच्चे ऐसे थे जिन्होंने उड़ना सीख लिया था। दूसरे दिन से गिद्ध ने उन्हें दाना लेने भेज दिया। वह स्वयं बच्चों की निगरानी के लिए रह गया। बच्चों को वह यह कहकर साहस-धैर्य बँधाता रहा कि उनके माता-पिता उनके लिए खूब-सी चीजें लेने गए हैं और जल्दी ही लौटेंगे।

सज्जन दूसरों की आपत्ति में दुःखी होते हैं, उनकी सहायता करते हैं, परंतु इसके विपरीत दुष्ट दूसरों पर विपत्ति आने पर बाहर से तो सहानुभूति दिखाते हैं, परंतु मन ही मन प्रसन्न होते हैं। वे उस समय भी अपना स्वार्थ पूरा करने की बात सोचते हैं। भीमा गिद्ध भी ऐसा ही था। वह यह समाचार जानकर बड़ा ही प्रसन्न हुआ। वह अपने पेट पर पंजा फिराते हुए कहने लगा—"वाह ! अब तो हम बहुत दिनों तक लगातार शानदार दावत छककर खाएँगे।"

फिर वह बूढ़े गिद्ध के पास गया। रोनी-सी सूरत बनाकर, उदास होकर कहने लगा—"भाई साहब ! सुना है आप तो बड़े ही संकट में फँस गए हैं।"

बूढ़ा गिद्ध जानता था कि हर किसी के सामने अपना दुःख रोने से कोई लाभ नहीं। जिससे कोई हल न मिल सके उससे कुछ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्यों कहा जाए ? दूसरों के दुःख को समझकर उन्हें सही सुझाव देने वाले तो कम ही होते हैं। ऐसे व्यक्तियों के सामने ही कुछ कहना भी उचित होता है। अतएव वह अपने दुःख को छिपाकर गंभीरता से बोला—"नहीं ! संकट क्या है कि पक्षी दूर चले गए हैं। वे कुछ दिन में लौट आएँगे।"

"फिर छोटे बच्चों के खाने-पीने की व्यवस्था कैसे होती है ?" भीमा पूछने लगा।

"कुछ बच्चों ने उड़ना सीख लिया है वे ही ले आते हैं।" बूढ़ा गिद्ध बोला।

"अरे ! वे अभी छोटे हैं, इतना काम वे कैसे करते होंगे ? आप कहें तो मैं दाना ला दिया करूँ या बच्चों के साथ चला जाया करूँ।" भीमा सहानुभूति दिखलाते हुए बोला।

बूढ़े गिद्ध ने कहा—"नहीं ! आपको कष्ट उठाने की क्या आवश्यकता है ? बच्चे अब समर्थ हो चुके हैं, उन्हें अपना उत्तरदायित्व निबाहने की आदत डालनी ही चाहिए।"

उसने इसलिए भी मना कर दिया था कि भीमा गिद्ध को वह बहुत अच्छी तरह जानता था। वह चार-छह बार उससे मिला तो अवश्य था, पर जब तक किसी को परख न लिया जाए, उस पर अधिक विश्वास करना उचित नहीं है।

भीमा गिद्ध चुप हो गया। वह तो सोचता था कि बूढ़ा गिद्ध आपत्ति में है और उसकी सहायता स्वीकार कर लेगा। "ठीक है मैं चलता हूँ। कभी जरूरत पड़े तो मुझे बुला लीजिएगा। आपके लिए कुछ कर पाऊँ, यह मेरा सौभाग्य होगा।" कहकर भीमा ने बूढ़े गिद्ध से विदा ली।

एक उपाय असफल होने पर अब भीमा दूसरा उपाय सोचने लगा। आखिर उसे युक्ति सूझ ही गई। दूसरे दिन वह बच्चों के निकलते ही उनके पीछे लग गया। "किधर चले आज बच्चो ?" बड़े प्यार से उसने पूछा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"दादाजी ! आज हम छोटी पहाड़ी की ओर जा रहे हैं। वहाँ बड़े मीठे-मीठे फल लगे हैं।" बच्चे बोले।

"ओह ! मैं भी वहीं जा रहा हूँ।" भीमा कहने लगा।

"आप हमारे साथ चलेंगे, बड़ी खुशी है दादाजी।" बच्चे बोले। उन्होंने उसे कभी-कभी बूढ़े गिद्ध के पास आते देखा था। अतएव भीमा पर संदेह करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता था। रास्ते भर वह बड़ी मीठी-मीठी बातें करता रहा। बच्चों को पता ही न लगा कि कब लंबा रास्ता कट गया ?

पहाड़ी पर जाकर भीमा बोला—"प्यारे बच्चो ! इधर आओ, इधर बड़े स्वादिष्ट फल हैं।"

वह बच्चों को पहाड़ी के एक ओर सुनसान जगह में ले गया। वहाँ कोई दूसरा पक्षी न था। भीमा ने अच्छा अवसर समझा। बच्चे अब थोड़ी-थोड़ी दूर पर जाकर फल खाने लगे थे। भीमा ने एक बच्चे को दबोच लिया। उसकी चीख सुनकर दूसरे बच्चों का ध्यान उधर गया। अरे ! यह तो इसे खा ही जाएगा। चलो हम सब मिलकर गिद्ध पर हमला करें।" उनमें से एक तोते का बच्चा बोला।

"हाँ ! चाहें मरें या जिएँ। साथी को संकट में यों अकेला न छोड़ेंगे।" दूसरा बच्चा बोला।

सभी ने मिलकर पीछे से जाकर एक साथ जोर से गिद्ध पर आक्रमण कर दिया। उसके मुँह में लगा बच्चा छूट गया। वह खून से लथपथ होकर झाड़ी में जा गिरा। उसका खून देखकर बच्चों का गुस्सा और भी बढ़ गया। वे भीमा को जोर-जोर से नोंचते जाते थे और साथ ही पूरी शक्ति से चिल्लाते जा रहे थे—"बचाओ-बचाओ ! इस दुष्ट से हमारी रक्षा करो।"

जिस पेड़ पर भीमा बैठा था, उसकी एक कोटर में चंद्रमुख साँप का बिल था। वह बच्चों का शोर सुनकर तुरंत बाहर निकला। भीमा की खून में सनी चोंच देखकर और बच्चों को उस पर यों आक्रमण करते देखकर वह सारी बात समझ गया। "दुष्ट आज तू अपने पाप का फल पा ही लेगा।" उसने अपने मन में कहा। भीमा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चंद्रमुख के नन्हें-नन्हें बच्चों को भी उठा ले गया था। उसने भी चंद्रमुख से मित्रता की थी और उसका विश्वास जीतकर यह छल किया था।

चंद्रमुख ने चुपचाप से भीमा की गर्दन जकड़ ली। "अरे मित्र ! यह क्या मजाक करते हो ?" भीमा चंद्रमुख से बोला।

"तुम मित्रता की आड़ में जंगल के न जाने कितने जीवों को छल चुके हो ? तुम्हारे जैसे पापी जितनी जल्दी मरे उतना ही अच्छा है।" यह सब उससे कहते हुए चंद्रमुख ने उसकी गरदन पर दबाव बढ़ा दिया।

"ओह ! मैंने कुछ नहीं किया। मित्र पर तनिक-सा रहम करो।" भीमा घिघियाते हुए बोला।

"तेरी सारी पोल खुल चुकी है। तुझ जैसे पापी पर रहम करना अत्याचार को बढ़ावा देना है।" कहकर चंद्रमुख ने भीमा को कसकर भींच डाला। उसकी आँखें बाहर निकल गईं और गर्दन एक ओर लुढ़क गई।

चंद्रमुख के आते ही चिड़ियों के सारे बच्चे वहाँ से फुर्र से उड़ गए थे। वे अपने घायल साथी के पास गए। उसके मुँह में चोंच से लाकर पानी डाला। बड़ी देर तक उसे पंखों से सहलाया, तब कहीं जाकर उसे होश आया। फिर वे उसे अपने पंखों से सहारा देकर धीरे-धीरे घर की ओर उड़ चले।

घर जाकर उन्होंने बूढ़े गिद्ध को सारी घटना विस्तार से सुनाई। उसने बच्चों को अपने पंखों से सटा लिया और बोला—"बेटो ! आज तुमने बड़ी बहादुरी और सूझ-बूझ से काम लिया है। यदि आज तुम जरा भी डर जाते, घबरा जाते तो सभी मारे जाते। जीवन में सबसे अधिक आवश्यक है—आत्मबल। इसके बिना सारी शिक्षा-दीक्षा बेकार है।"

"दादाजी ! हम आपके अच्छे बच्चे हैं न। आपकी शिक्षाओं का हम पालन करते हैं न।" बच्चे भी लाड़ से अपना सिर गिद्ध दादा के पंखों में छिपाते हुए कहने लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दादा भी उनके सिरों को सहलाते हुए विस्तार से समझाने लगे—"बच्चो ! जीवन में पग-पग पर संकट है। संसार में सज्जन हैं तो दुष्टों की भी कमी नहीं हैं। ये दुर्जन दूसरे से छल करते हैं, उन्हें सताते रहते हैं। यदि हम में आत्मबल है, आपत्ति के समय विवेक बुद्धि से काम लेने की शक्ति है, तभी हम उन पर विजय पा सकते हैं। आपत्ति में घबरा जाने पर, परेशान होने पर तो दुर्जनों का साहस और अधिक बढ़ता है। तब वे हमारा उपहास करते हैं, हमें दबाते हैं। इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि हर परिस्थिति में धैर्य रखें, साहस रखें, विवेक से कार्य करें, तभी जीवन में सफलता मिल सकती है।"



Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शक्ति की परीक्षा

सारे पक्षी बहेलिए के जाल में फँस गए थे। वे उस घड़ी को कोस रहे थे, जब उन्होंने चावल देखे थे और उनके लालच में वे जाल में फँसे थे। वे रो रहे थे, तरह-तरह से विलाप कर रहे थे। कोई अपने बूढ़े माता-पिता की चिंता कर रहा था, तो कोई बच्चों की। सभी पछता रहे थे और रजत चिरौटे को भला-बुरा कह रहे थे। जिसके कहने से वे चावल खाने के लिए उतरे थे। उनका नेता प्रांशु जो चुपचाप कुछ विचार कर रहा था, उससे अब न रहा गया। वह बोला—"आपको पहले ही सोच-विचार कर काम करना चाहिए था, अब किसी को दोष देने से क्या लाभ ?"

प्रांशु की बात सुनकर पक्षियों का रोना-बिलखना, शोर मचाना कुछ कम हुआ। एक बड़ी अनुभवी चिड़िया बोली—"नेताजी ! आपकी बात यदि हम पहले ही मान लेते, तो विपत्ति में न पड़ते। अपनी मूर्खता से ही हमने मुसीबत बुलाई है। कृपया इससे छुटकारा पाने का अब कोई उपाय बतलाइए। आपत्ति आती है, तो उसका कोई न कोई हल भी होता है।"

मनस्वी धैर्यपूर्वक विचार करके उसे पा लेते हैं। आपकी बुद्धि पर हमें विश्वास है। कृपया कोई न कोई रास्ता दिखलाएँ। हमें अपनी नहीं अपने बच्चों की अधिक चिंता है, जो कि भूखे-प्यासे बिलख रहे होंगे।

प्रांशु उन्हें धैर्य बँधाते हुए बोला—"घबराओ नहीं ! अपने मन के साहस को कम न होने दो। बहादुरी से काम करो, आगे ईश्वर की इच्छा। हमारा अधिकार काम करने में ही है, फल तो ईश्वर के अधीन है।" प्रांशु ने फिर धीमे स्वर में पक्षियों से कुछ कहा। उसकी बात सुनकर उनका दुःख कुछ कम हुआ और सफलता की आशा बँधने लगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहेलिया खुशी-खुशी तेजी से चल रहा था। वह सोच रहा था कि आज तो बहुत-से पक्षी फँसे हैं, खूब से पैसे मिलेंगे उनसे मैं खीर-पूरी खाऊँगा।

जंगल की सीमा पर आकर बहेलिए ने सिर पर से जाल उतारा, पर यह क्या ? सारी चिड़ियाँ मरी-सी पड़ी थीं। उनकी साँस अटकी हुई थी, आँखें ऊपर चढ़ी हुईं थीं। उन्हें ऐसी स्थिति में देखकर वह हड़बड़ा गया। बोला—"ओह ! लगता है गर्मी से इनकी यह दशा हो गई है। कितनी सुंदर चिड़ियाँ हैं ? मर गईं तो इन्हें कौन खरीदेगा ? यह कहते हुए उसने शीघ्रता से जाल खोलकर जमीन पर फैला दिया।

फिर वह बुदबुदाया—"इन्हें पानी पिलाकर देखता हूँ। शायद कुछ बच जाएँ।"

बहेलिया ने अपने कंधे पर पड़ी चादर उतारी। उसे उसने चिड़ियों पर डाल दिया, जिससे और किसी पशु-पक्षी की निगाह उन पर न पड़े तथा कोई उन्हें हानि न पहुँचा सके। फिर अपने झोले से लोटा निकाला और चिड़ियों को पानी लाने के लिए तेजी से नदी की ओर दौड़ा।

प्रांशु ने देखा बहेलिया दूर जा चुका है। वह बोला—"भाइयो और बहिनो ! पूरी शक्ति लगाओ और उड़ चलो।"

सभी ने जोर लगाया, पर चादर के कारण वे उड़ न सके। पृथ्वी से तनिक ऊँचा उठे और फिर गिर गए। यह देखकर प्रांशु कहने लगा—"देखो ! मरना तो तब भी है जब उस दुष्ट बहेलिए के हाथ पड़ जाओगे। विपत्ति में घबराकर बैठ जाना कायरता है। उठो ! पूरी शक्ति से जुट पड़ो। संघर्ष करते हुए मरोगे या फिर सफलता प्राप्त करोगे। कायर तो मृत्यु से पहले ही अनेक बार मर चुका होता है, परंतु बहादुर मरने के दिन ही मरता है। वह हर संकट में पूरी शक्ति के साथ संघर्ष कर विजयी होता है और गौरव पाता है।"

प्रांशु की प्रेरणा भरी बातों से पक्षी जोश से भर उठे। मन में आशा और उत्साह हो, पूरी शक्ति से काम किया जाए तो फिर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफलता मिलते भी देर नहीं लगती। प्रांशु की बातों से उनमें अपूर्व बल आ गया। वे पूरी शक्ति से उड़े और अंत में ऊँचे उड़ने में सफल हो ही गए। वे अपने साथ-साथ चादर को भी ले उड़े। बहेलिये के डर से वे तेजी से उंड़ रहे थे।

बरगद के एक विशाल वृक्ष के समीप आने पर प्रांशु ने सुझाव दिया—"सभी एक साथ बरगद से थोड़ी ऊँचाई तक उड़ते रहें, फिर सभी एक साथ नीचे गोता खा लें। इस प्रकार चादर बरगद पर रह जाएगी और हम सभी एक साथ मुक्त हो जाएँगे।"

पक्षियों ने ऐसा ही किया और आखिर वे चादर से भी छूट गए। अब सब बहुत प्रसन्न थे। वे घर की ओर चल पड़े। सभी प्रांशु का आभार व्यक्त कर रहे थे। उसी की बुद्धिमानी से वे आज बच पाए थे। प्रांशु भी हँसकर उनकी बधाई ले रहा था और कह रहा था—"साथियो ! विपरीत परिस्थितियों में भी तुमने साहस और धैर्य से काम लिया है, अतएव तुम सच्चे शूरवीर हो।"

"यह सब तो आपकी ही प्रेरणा का परिणाम है।" सारे पक्षी एक साथ बोले।

प्रांशु कह रहा था—"हम में अपार शक्ति छिपी होती है। आवश्यकता बस इस बात की है कि उस शक्ति पर हम विश्वास रखें, आत्मबल न खोएँ, संकट की घड़ी में पूरी शक्ति से जूझ जाएँ। तब निश्चित ही हमें सफलता मिलेगी। हम पराजित तब होते हैं, जब हमारा मन हार जाता है। आशा और उत्साह से भरे विचार मन की शक्तियों को, हमारी आंतरिक और बाहरी सामर्थ्यों को ही बढ़ाते हैं।"

"वह तो हमने आज ही प्रत्यक्ष देख लिया।" पक्षी बोले।

बातों ही बातों में बरगद का वह पेड़ आ गया, जिस पर उनके घोंसले थे। पक्षियों को आते हुए जानकर उनके नन्हें-नन्हें बच्चे चोंच फाड़कर खुशी से चिचिया उठे। वे अपने माता-पिता से लिपट गए। गिद्ध की आँखों में भी खुशी के आँसू छलक उठे। वह बच्चों की ओर इशारा करते हुए बोला—"लो सँभालो अपनी अमानत।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बड़े बच्चों से पक्षियों को सारी बात पता लगी कि किस प्रकार बूढ़े गिद्ध ने बच्चों की रक्षा में दिन-रात एक कर दिया था। यह सब जानकर उसके प्रति उनकी श्रद्धा और अधिक बढ़ गई। उन्होंने गिद्ध का आभार व्यक्त करते हुए कहा—"दादाजी ! आप यहाँ न होते, तो हमारे बच्चे शायद ही हमें मिल पाते। आपका उपकार व्यक्त करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं।"

"यह सब तो रहने दो उसकी कोई जरूरत भी नहीं, पर यह सब बताओ कि तुम्हें वापिस लौटने में इतना समय कैसे लग गया ?" गिद्ध बोला।

तब पक्षियों ने आप बीती सारी कथा सुनाई। बूढ़े गिद्ध ने उसे सुनकर आकाश की ओर सिर उठाया, आँख बंद की और बोला—"प्रभु ! तुम ही सबके रक्षक हो। मारने वाले से बचाने वाले की शक्ति अधिक होती है।"



Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नई दिशा

आनंद वन में बड़ी चहल-पहल रहती थी। वहाँ भाँति-भाँति के जीव-जंतु थे। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे लड़ाई-झगड़े से प्रायः दूर ही रहा करते थे। यही कारण था कि आनंद वन में सदैव मंगल छाया रहता था।

एक बार श्यामू वानर को न जाने क्या सूझी ? उसी दिन वह शहर से लौटा था। वह एक ऊँचे से मचान पर चढ़कर बैठ गया। उसने अपने सामने भोजपत्र रखे, फिर पेड़ की पतली टहनी से, पत्तों के रस से उस पर उसने कुछ लिखना प्रारंभ कर दिया। उसकी आँखों पर शहर से लाया चश्मा चढ़ा था और वह बड़ी अदा से बैठा था। जो भी उधर से गुजरता श्यामू वानर की ओर आकर्षित होता। सभी पूछते—"अरे भाई ! यह क्या कर रहे हो ?"

श्यामू गर्व से अपना सिर ऊँचा करता और कहता—"देखते नहीं ! मैं पत्रकार बन गया हूँ।"

"पत्रकार ! यह क्या बला है ?" वे अचंभे से पूछते।

तब श्यामू वानर उन सभी को विस्तार से समझाता कि वह अखबार निकालेगा। सभी को उससे घर बैठे जंगल के ही नहीं, उसके आसपास के भी ताजे समाचार प्रतिदिन पता लगा करेंगे। श्यामू की बात सुनकर कुछ बड़े-बूढ़ों ने नाक-भौं भी सिकोड़ी। वे कहने लगे—"ओह ! यह श्यामू तो आदमियों से न जाने क्या-क्या सीख आया है ? उनकी नकल करके यह सारे ही जंगल को बरबाद कर देगा।"

श्यामू चुप ही रहा। उसने बुजुर्गों के मुँह लगना उचित न समझा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूसरे ही दिन से श्यामू का अखबार निकलना प्रारंभ हो गया। उसका नाम रखा गया—"कपिलोक।" उसमें जंगल के पूरे समाचार रहते। श्यामू कपिलोक को स्वयं लिखता। रात तक सारे समाचार पूरे हो जाते। प्रातःकाल ही चन्नू बंदर कपिलोक लेकर पेड़ की ऊँची शाखा पर बैठ जाता। पेड़ के नीचे समाचार जानने को उत्सुक बंदर पंक्ति बनाकर शांति से बैठ जाते। चन्नू उन सभी को समाचार पढ़कर सुनाता जाता। आधा-एक घंटा वे समाचार सुनते, फिर अपने-अपने काम पर चले जाते।

बंदर यह अनुभव करने लगे थे कि अखबार से उनका ज्ञान बढ़ रहा है। वे एक-दूसरे से 'कपिलोक' की प्रशंसा करते। परिणाम यह हुआ कि सुनने वालों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती ही गई। अब बंदर ही नहीं, अन्य जीव भी वहाँ आने लगे थे। जंगल के बच्चे-बूढ़े हर एक की जवान पर 'कपिलोक' की ही चर्चा रहती।

श्यामू वानर के इस कार्य से दूसरे जानवरों को भी प्रेरणा मिली। उन्होंने सोचा कि क्यों न हम अपने समुदाय का अखबार निकालें। 'कपिलोक' में तो प्रमुख रूप से वानर समाज के समाचार रहते हैं। फिर दूसरे वहाँ सुनने वालों की इतनी भीड़ रहती है कि बैठने को भी स्थान नहीं मिलता। कभी-कभी आपस में चख-चख भी हो जाती है।

जल्दी ही आनंद वन में अनेक अखबार निकलने प्रारंभ हो गए। जग्गू हाथी, कालू भेड़िया, सोनू हिरन, भोंदू गधा, मोटू सूअर आदि अपने-अपने अखबार निकालने लगे।

इतने सारे अखबार निकलने से जब जंगल के जीवों का ज्ञान खूब बढ़ रहा था। वे सभी ताजा खबर जानने के लिए बड़े उत्सुक रहते। अधिकांश जीवों की यही दिनचर्या बन गई थी कि पहले अखबार सुनना फिर काम पर आना।

जग्गू हाथी बड़ा विवेकशील था। वह हर स्थिति को सूक्ष्मता में देखता था, उस पर विचार करता था। ऐसे प्राणी न केवल अपना कल्याण करते हैं, वरन् औरों को भी नई दिशा देते हैं। जग्गू जंगल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में समाचार पत्रों के प्रति बढ़ती हुई रुचि को स्पष्ट देख रहा था। उसने विचार किया कि समाचार पत्रों में जो खबरें होती हैं, वह अधिकांशतः निषेधात्मक ही होती हैं। अर्थात् प्रमुख रूप से ऐसी खबरें होती हैं कि सोना बकरी के बच्चे भेड़िए ने चुराए, कालू भालू और चतुरा लोमड़ी में घमासान लड़ाई, ननकू लोमड़ी चानी मुर्गी के पाँच बच्चे चट कर गई, भापा गेंड़ा ने सामी रीछ के घर पर धोखे से कब्जा किया, पानी पीते हिरणों पर नृसिंह शेर ने हमला किया आदि-आदि। जग्गू ने अनुभव किया कि इससे जंगल की जीव घटनाओं से तो परिचित हो जाते हैं, पर उन्हें कोई प्रेरणा नहीं मिलती, दिशा नहीं मिलती। उल्टे उससे कभी-कभी दूसरे जीवों को वैसी ही चालाकी की बात और सूझ जाती थी। जग्गू जानता था कि जो हम पढ़ते हैं, उसका प्रभाव गहराई से हमारे मन पर पड़ता है। जग्गू इस समस्या पर कई दिनों तक विचार करता रहा और अंत में उसे हल सूझ ही गया।

जंगल के जानवरों ने दूसरे दिन पाया कि जग्गू के समाचार-पत्र की रूपरेखा ही बदली हुई है। उसके मुखपृष्ठ पर प्रेरक लघु-लेख था—"जीवन में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है आपका व्यवहार। इसी से आपका सच्चा परिचय मिलता है। यह हर स्थान पर आदर पाने के लिए वास्तविक प्रवेश-पत्र है। प्रतिदिन कुछ पल विचार कीजिए, अपने दैनिक व्यवहार की त्रुटियाँ देखिए और उन्हें हटाने के लिए पूरी तन्मयता से जुट जाइए। तभी आप जीवन में पा सकेंगे—दूसरों का सच्चा स्नेह, सहानुभूति, सम्मान और श्रद्धा। इसके बाद प्रारंभ हुए थे समाचार। सबसे ऊपर बड़ा-सा शीर्षक था—"जंगल के गौरव।" इसके अंतर्गत प्रेरक समाचार थे, जैसे—मनियाँ साही ने चंपा लोमड़ी के प्राण बचाए। एक-दूसरे के प्राण लेने पर तुले हुए छन्नू और मन्नू सुअर में भापा गेंड़ा ने सुलह कराई। बंदर समाज में बच्चों का नया स्कूल खुला, जिसमें बच्चों की नैतिक शिक्षा पर बल दिया जाता है। ननकू बकरी के नन्हें बच्चों ने जान पर खेलकर मित्रों को बचाया आदि। इन समाचारों के बाद अगले पृष्ठ पर मोटा-मोटा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शीर्षक था—'जंगल के कलंक ये कलमुहे' और इसके नीचे समाचार दिए गए थे—लूटपाट, हत्या, चोरी, धोखा, बेईमानी आदि के। इनके करने वालों की कड़ी निंदा की जाती थी। समाचार इस ढंग से प्रस्तुत किए जाते थे कि 'जंगल के गौरव' स्तंभ को पढ़कर उन जानवरों के प्रति श्रद्धा बढ़ती थी। 'जंगल के कलंक ये कलमुहे' स्तंभ को पढ़कर पाप और पापी के प्रति घृणा ही उत्पन्न होती थी।

ऐसे समाचार-पत्र के लिए पहले दिन तो श्यामू बंदर, कालू भेड़िया, सोनू हिरन, भोंदू गधा, मोटू सुअर आदि सभी ने जग्गू का मजाक बनाया। श्यामू बंदर तो जग्गू की पीठ पीछे खूब जोर से ताली बजाकर हँसते हुए बोला था कि जैसा मोटा शरीर है ठीक वैसी ही मोटी भगवान ने अकल भी बनाई है। बड़े ही आए है पत्रकार बनने।

सबकी कही हुई बातें बढ़-चढ़कर जग्गू के पास भी पहुँचती थीं, पर वह अपने संकल्प पर दृढ़ था। एक दिन श्यामू बंदर बहस करते हुए बोला—"समाचार पत्र तो होते हैं जानकारी के लिए। तुम तो समाचारों को अपनी टिप्पणी देकर लिखते हो—यह कोई तरीका नहीं।"

जग्गू बड़े शांत भाव से बोला—"मैं तो यह मानता हूँ कि कोरी जानकारी बढ़ाने से कोई विशेष लाभ नहीं। हमारा जीवन अस्त-व्यस्त रहता है, भागम-भाग रहती है, समाचार-पत्र सुनने में कोई मार्गदर्शन न मिले, दिशा-बोध न मिले, तो फिर इसका लाभ ही क्या रहा ?"

श्यामू ने जग्गू की बात का खूब विरोध किया और बोला—"इस तरह ऐसे ही निकालोगे तो चल गया तुम्हारा अखबार। देखना कुछ ही दिनों में ठप्प हो जाएगा और भूखों मरने की नौबत ही आ जाएगी।"

जग्गू ने कहा—"यदि ऐसा होगा तो भी कोई चिंता नहीं। मैंने अखबार निकाला है—समाज की सेवा के लिए, न कि अपना घर भरने के लिए।"

अब श्यामू निरुत्तर हो गया था। उसने जग्गू से कोई बहस करना उचित न समझा और वह क्रोध में भरकर वहाँ से तुरंत चला आया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी नई बात का प्रारंभ में तो खूब विरोध होता है, पर अब उसकी अच्छाई समझ में आती है, तो उसे मानने वालों की संख्या भी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है, जग्गू के साथ भी यही हुआ। प्रारंभ में तो उसे अपने समाचार-पत्र के सुनने वाले भी कठिनाई से मिलते थे, पर धीरे-धीरे जानवरों ने उसकी उपयोगिता समझी और उसमें रुचि लेनी प्रारंभ की। धीरे-धीरे जग्गू के इस समाचार-पत्र का प्रभाव बढ़ता गया। श्रोता अधिक से अधिक संख्या में आने लगे। स्थिति यहाँ तक आ गई कि जानवर 'जंगल के गौरव' के अंतर्गत जिनके समाचार होते, उन्हें सार्वजनिक रूप से सम्मानित करने लगे। इसी प्रकार 'जंगल के कलंक' शीर्षक में जिन जानवरों की काली करतूतें छपतीं, उससे जानवरों के मन में उसके प्रति घृणा और आक्रोश जगता और वे सभी की उपेक्षा और अनादर का पात्र बनते। यही नहीं, दूसरे जानवर उनका सामाजिक बहिष्कार भी करने लगे। परिणाम यह हुआ कि अच्छा करने वालों को और भी अच्छाई करने का प्रोत्साहन मिलता। बुरा कार्य करने वाले जीव डरने लगे कि कहीं उनकी खबर अखबार के जासूसों को पता न लग जाए। अखबार में खबर छपने पर तो फिर उन्हें सभी से तिरस्कार और अवहेलना ही मिलेगी। दूसरों के सामने वे शर्म से आँखें भी न उठा पाएँगे।

जग्गू का अखबार 'गजमुक्ता' जल्दी ही पूरे आनंद वन में बड़ा लोकप्रिय हो गया। उसे हाथी ही नहीं बंदर, भालू, शेर, लोमड़ी आदि दूसरे जानवर भी बड़ी रुचि से सुनते थे। समाचार भी उसमें जंगल भर के रहते थे। श्यामू बंदर आदि को भी यह स्वीकार करना पड़ा कि जग्गू दादा की सूझ-बूझ ही अच्छी है। अंत में उन्हें भी अपने समाचार-पत्रों का ढर्रा बदलना पड़ा। उन्होंने भी आखिर अपने-अपने समाचार-पत्रों की रूपरेखा 'गजमुक्ता' के अनुसार ही बना ली और इस प्रकार आनंद वन के समाचार-पत्रों के इतिहास में एक नया मोड़ आया। इसका परिणाम भी जल्दी ही दिखाई दिया। पूरे जानवरों में आने लगी नई चेतना, नई जागृति, सन्मार्ग पर निरंतर बढ़ने की नित नई प्रेरणा।



Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभिभावकों से एक निवेदन

बच्चों का मन स्वच्छ और निर्विकार होता है। इसे उत्कृष्ट विचारों से प्रभावित करने के लिए साहित्य की अनेक विधाएँ प्रचलित हैं, लेकिन कहानियों, कविताओं और महापुरुषों की जीवनी के प्रेरक प्रसंग बच्चों के लिए अत्यंत रोचक एवं प्रभावशाली होते हैं। इसी विचारधारा को सामने रखकर युगऋषि पूज्य पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से बाल निर्माण की कहानियों के सोलह भाग प्रकाशित किए गए। महापुरुषों की जीवनियों पर ६७ पुस्तकें प्रकाशित की गईं। ''बाल-नीति शतक'' में बच्चों के लिए प्रेरणाप्रद १०० दोहे प्रकाशित किए गए हैं। ये सभी पुस्तकें बच्चों को सच्चरित्र बनाने, उनका स्वाभिमान जगाने, प्रतिभा बढ़ाने, राष्ट्र के अच्छे नागरिक बनने की प्रेरणा-प्रोत्साहन देती हैं। आपसे निवेदन है कि इन पुस्तकों को आप अपने बच्चों के लिए अवश्य उपलब्ध कराएँ। साहित्य की विस्तृत सूची पत्र डालकर निःशुल्क मँगा लें। बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी शुभकामनाएँ एवं पूज्य गुरुदेव के अनेक आशीर्वाद।

व्यवस्थापक
युग निर्माण योजना, मथुरा

मुद्रक युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org